₹15/-

वर्ष 42 अंक 8 अगस्त 2015

हँसती दुनिया

कभी न भूलो ✿ **देशभक्त पंजाब केसरी** ✿ आज तिरंगे को फहरायें ✿ **प्रेरक विभूति**
राखी का संदेश ✿ बेचारे परिन्दे ✿ **तिरंगा ध्वज** ✿ परिश्रम ✿ **किट्टी** ✿ ड्यूगाँग

हँसती दुनिया

• वर्ष 42 • अंक 8 • अगस्त 2015 • पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

विमलेश आहूजा
सम्पादक

सुभाष चन्द्र
सहायक सम्पादक

Ph.: 011-47660200
Fax: 011-27608215

Website: http//www.nirankari.org
kids.nirankari.org

Email: editorial@nirankari.org

सी. एल. गुलाटी
प्रभारी पत्रिका विभाग

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009 के लिये, हरदेव प्रिंटर्ज, निरंकारी कालोनी दिल्ली–110009 से मुद्रित करवाया।

Subcription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£80	€100	$120	$140

Other Countries
Equillant to U.S. Dollars as mentioned above.

स्तम्भ

5 सबसे पहले
9 कभी न भूलो
18 समाचार
25 वर्ग पहेली
34 भैया से पूछो
38 पढ़ो और हँसो
41 जन्मदिन मुबारक
47 आपके पत्र मिले
48 रंग भरो परिणाम

चित्रकथाएं

12 दादा जी
42 किट्टी

विशेष / लेख

10 **देशभक्त पंजाब केसरी लाला लाजपत राय**
: राजेन्द्र यादव 'आजाद'

11 **प्रेरक विभूति विनय जोशी**
: शिखा जोशी

20 **पहेलियां**
: नेहा गाबा

26 **सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी**
: विकास अरोड़ा

28 **ड्यूगाँग**
: डॉ. परशुराम शुक्ल

37 **हमारे राष्ट्रीय प्रतीक**
: विद्या प्रकाश

कविताएं

21 **राखी बांधो प्यारी बहना**
: महेन्द्र कुमार वर्मा

27 **तिरंगे को सलाम**
: गफूर 'स्नेही'

27 **तिरंगा ध्वज**
: मोती विमल

36 **सदियों की राखी**
: हरिप्रसाद धर्मक

36 **राखी का संदेश**
: चन्द्रभान निरंकारी

46 **आज तिरंगे को फहरायें**
: शिवनारायण सिंह

कहानियां

6 **जैसा को तैसा**
: राधेलाल 'नवचक्र'

16 **महात्मा ललन और लालू**
: कमल सौगानी

22 **बेचारे परिन्दे**
: डॉ. सेवा नन्दवाल

32 **राख ने बदली तकदीर**
: चाँद मोहम्मद घोसी

35 **आजादी**
: राजेन्द्र सिंह

40 **परिश्रम**
: किशोर डैनियल

JAI RAM DASS

NIRANKARI
SONS
JEWELLERS PVT. LTD

RAMESH NARANG

GOVT. APPROVED VALUER

Ramesh Narang : 9811036767
Avneesh Narang : 9818317744

27217175, 27437475, 27443939

Shop No. 39, G.T.B. Nagar, Edward Line,
Kingsway camp, Delhi-9
E-mail: nirankarisonsjewellers@gmail.com

सबसे पहले

एक छोटा बिन्दु

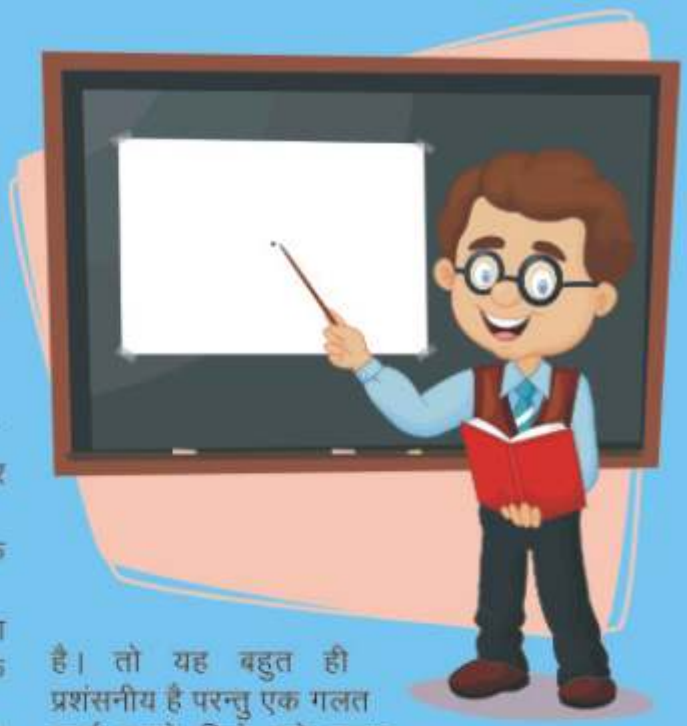

एक अध्यापक अपनी क्लास में आए और उन्होंने एक बड़ा सफेद कागज 'ब्लैक बोर्ड' पर चिपका दिया। तत्पश्चात् उस कागज के बीच में काले पैन से एक छोटा सा बिन्दु बना दिया। सभी विद्यार्थी इस दृश्य को देख कर उत्सुक थे कि हमारे अध्यापक जी आज क्या करने वाले हैं? इतने में अध्यापक ने एक विद्यार्थी से बोले कि सामने बोर्ड पर देखो और बताओ कि तुम्हें क्या दिखाई दे रहा है।

विद्यार्थी ने तुरन्त उत्तर दिया– सर; एक काले रंग का बिन्दु दिखाई दे रहा है।

यही प्रश्न लगभग सभी विद्यार्थियों से पूछा और सभी का एक ही उत्तर था कि बोर्ड पर एक काला बिन्दु ही दिखाई दे रहा है।

यह प्रश्न उन्होंने स्कूल की अन्य कक्षाओं में भी किया था और सभी का उत्तर भी यही था।

फिर यह प्रश्न उन्होंने अपने अन्य सहकर्मियों से भी किया और उन्होंने भी यही उत्तर दिया कि बोर्ड पर काला बिन्दु ही दिखाई दे रहा है।

यह बात बिल्कुल ठीक भी थी तभी तो सभी एक सा ही उत्तर दे रहे थे क्योंकि सभी ने काला बिन्दु ही देखा था तो वे सभी यही बताएंगे– जी हाँ हमने काला बिन्दु देखा है या दिख रहा है।

अब अध्यापक ने अपनी बात को स्पष्ट करते हुए कहा कि इतने बड़े बोर्ड पर एक बड़े सफेद कागज की शीट पर छोटा सा बिन्दू या धब्बा तो सभी को दिखाई दिया परन्तु किसी ने यह नहीं कहा कि सामने सफेद कागज की शीट भी है। सफेद कागज की शीट इतनी बड़ी है उसका किसी ने कोई उल्लेख नहीं किया, परन्तु सभी ने काले धब्बे का ही वर्णन किया।

प्यारे साथियों, यह चिन्तन का विषय है कि अगर हमारा हर कर्म बहुत ही स्वच्छ, निर्मल और शुद्ध है। तो यह बहुत ही प्रशंसनीय है परन्तु एक गलत कार्य हमारे किये गये उत्तम कार्यों पर भारी पड़ जाता है। काले धब्बे की तरह हमारे सौ अच्छे कर्म भी पीछे रह जाते हैं अगर हमसे कोई भी गलत काम हो जाता है।

एक बात और कि हमें केवल काला धब्बा ही क्यों दिखाई पड़ता है। वह बड़ा कागज जो सफेद है वह नहीं दिखता। यह बात ध्यान में रखनी ही होगी कि अगर हम इस तरह से दूसरों को देखते हैं तो दूसरे भी हमें इसी निगाह से देखते हैं।

आओ, इस दृष्टिकोण से हम अपनी सोच को बदलें, हम जब भी देखें किसी के सद्गुणों को ही देखें अर्थात् सकारात्मक होकर देखें न कि अन्यथा....

हमें शुभ देखने का प्रयास करना होगा तभी हम अन्य विचारों से मुक्त हो सकेंगें। हम अगस्त माह में स्वतन्त्रता दिवस या मुक्ति पर्व मनाते हैं जिसका उद्देश्य भी यही है कि हमें कुण्ठित या नकारात्मक सोच से मुक्ति लेनी है और स्वतन्त्र होना है सीमित दायरों से। तभी हम विशाल, असीम और सुसंस्कृत बन सकते हैं।

– विमलेश आहूजा

कहानी : राधेलाल 'नवचक्र'

जैसा को तैसा

एक नगर था। उस नगर में एक व्यापारी रहता था। उसका नाम था जीर्णधन। जीर्णधन को एक बार अपने व्यापार में काफी नुकसान हुआ। उसकी आर्थिक स्थिति चरमरा गई। उसने अपनी स्थिति को सुधारने की बात सोची।

आखिर में उसने निर्णय लिया कि किसी दूसरे नगर में जाकर कुछ करना चाहिए। बाहर जाने के लिए उसे धन की जरूरत महसूस हुई। उसके पास तो कुछ था ही नहीं। हाँ, पूर्वजों के द्वारा दिया हुआ लौहे का एक मजबूत तराजू उसके पास बचा था। वह उस तराजू को लेकर एक साहूकार के पास गया। फिर उससे बोला– यह तराजू मेरे खानदान की निशानी है। यह मुझे जान से भी प्यारा है परन्तु इस समय आप इसे गिरवी रखकर मुझे कुछ धन दीजिये। मैं बाहर जा रहा हूँ। मुझे रुपयों की अत्यन्त जरूरत है। यथाशीघ्र मैं आपके रुपये लौटा कर इस तराजू को छुड़ा लूँगा।

'बहुत खूब।' कहकर साहूकार ने तराजू लेकर रख लिया और जीर्णधन को जरूरत भर रुपये देकर विदा किया।

दूसरे नगर में जाकर जीर्णधन ने उन रुपयों से व्यापार करना शुरू कर दिया। व्यापार खूब चला। अच्छा–खासा मुनाफा उसे व्यापार में हुआ। वह धन लेकर अपने नगर लौटा। वहाँ आते ही वह सीधे साहूकार के पास गया। फिर उससे कहा– आप अपने रुपये ले लीजिये और गिरवी रखा हुआ मेरा तराजू लौटा दीजिए।

साहूकार यह सुनकर उदास हो गया। वह कुछ बोला नहीं। वास्तव में तराजू देखकर उसकी नीयत खराब हो गई थी। वह तराजू लौटाना नहीं चाहता था उसके मन में लालच आ गया था।

जीर्णधन को बात कुछ समझ में नहीं आई उसने फिर कहा– आप मेरी बात सुनकर उदास क्यों हो गये? मेरा तराजू सुरक्षित है न?

–वही तो रोना है।– साहूकार बोला।

–मतलब?– जीर्णधन ने घबराकर पूछा।

–दरअसल आपके तराजू को चूहे कुतरकर खा गये। मैं उसे लौटाने में असमर्थ हूँ।– साहूकार ने बताया।

कुछ सोचकर जीर्णधन ने मुस्कुराकर कहा– बस, इतनी सी बात है। छोड़िये इसे। मैं बाहर से आ रहा हूँ। स्नान के लिए नदी किनारे जा रहा हूँ। आप एक काम कीजिए।

–कहो–

–स्नान करने के लिए जरूरी सामानों के साथ आप अपने बेटे को नदी किनारे भेज दीजिए।

–तुरन्त भेज देता हूँ।– साहूकार उत्साहित हो बोला।

जीर्णधन वहाँ से चला गया। थोड़ी देर बाद वह स्नान कर साहूकार के पास लौटा। वह अकेला था। साहूकार ने जीर्णधन से पूछा– मेरा बेटा कहाँ है?

यह सुनकर जीर्णधन उदास हो चला। कुछ जवाब नहीं दिया। साहूकार को आशंका हुई। उसने घबराकर जीर्णधन से पूछा– आप चुप क्यों हैं? मेरा बेटा कहाँ है? उसे आपने कहाँ छोड़ दिया?

जीर्णधन रोनी सूरत बनाकर बोला– क्या कहूँ साहूकार जी, जब हम लोग स्नान कर लौट रहे थे तब एक बाज उड़ता हुआ आकाश से नीचे उतरा। वह आपके बेटे को लेकर उड़ चला। मैं देखता रह गया। कुछ नहीं कर सका। बहुत अफसोस है कि मैं आपके बेटे की रक्षा के लिए कुछ नहीं कर सका।

–तुम झूठ बोल रहे हो– साहूकार ने कहा।

–सही कह रहा हूँ साहूकार जी, मेरी बात पर विश्वास कीजिए।– जीर्णधन ने अपनी बात पर जोर देकर कहा।

मगर साहूकार नहीं माना। आपस में तू... तू... मैं... मैं... होता रहा। आखिर साहूकार ने जीर्णधन को धमकी दी– मैं अभी राजा के पास फरियाद लेकर जाता हूँ। तुम्हारी करतूत की सजा तुम्हें वहीं मिलेगी।

–जैसा उचित समझो, कर सकते हो।– जीर्णधन ने कहा।

साहूकार झट राजा के पास जा पहुँचा। उसे अपनी फरियाद सुनाई। तत्क्षण जीर्णधन को बुलाया गया। जीर्णधन वहाँ पहुँचा।

राजा ने जीर्णधन से पूछा– आज तक कोई बाज लड़के को लेकर नहीं उड़ा है। तुम क्यों झूठ बोल रहे हो?

–हुजूर! आप ठीक कहते हैं।– जीर्णधन ने राजा से कहा।– मगर लौहे के मजबूत तराजू को आज तक कोई चूहा कुतरकर खा सका है?

–नहीं तो!– राजा बोला।

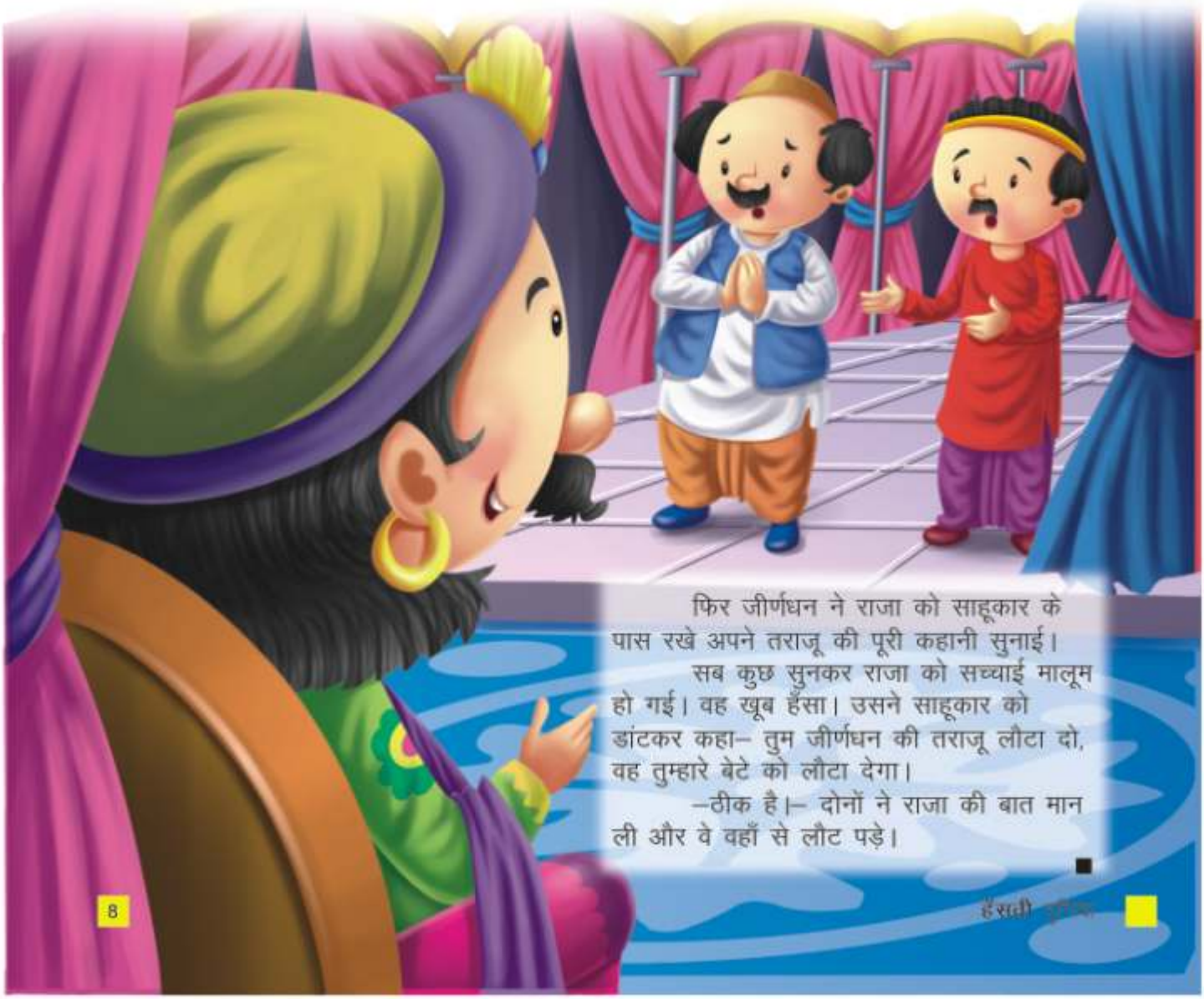

फिर जीर्णधन ने राजा को साहूकार के पास रखे अपने तराजू की पूरी कहानी सुनाई।

सब कुछ सुनकर राजा को सच्चाई मालूम हो गई। वह खूब हँसा। उसने साहूकार को डांटकर कहा– तुम जीर्णधन की तराजू लौटा दो, वह तुम्हारे बेटे को लौटा देगा।

–ठीक है।– दोनों ने राजा की बात मान ली और वे वहाँ से लौट पड़े। ■

संग्रहकर्ता : किशन लाल शर्मा (आगरा)

कभी न भूलो

- निराकार प्रभु से नाता जोड़ें, इसी से सभी सुख प्राप्त होते हैं।

- सहनशीलता कमजोरी नही, बल्कि बल की सूचक है।

- जंग कभी अच्छी नहीं होती, शान्ति कभी बुरी नहीं होती।

  – बाबा हरदेव सिंह जी महाराज

- एक दूसरे के सुख–दुःख में काम आना ही इन्सानों वाला कर्म है।

  – निरंकारी राजमाता कुलवन्त कौर जी

- शुरूआत करने के लिए महान होना आवश्यक नहीं है, परन्तु महान बनने के लिए शुरूआत करना अनिवार्य है।

  – हेनरी डेविड थोरू

- मैं नरक में भी अच्छी पुस्तक का स्वागत करूँगा क्योंकि उनमें वह शक्ति है कि जहाँ ये होंगी, वहीं स्वर्ग बन जायेगा।

  – लोकमान्य तिलक

- नाम में क्या रखा है? जिसे हम गुलाब कहते हैं, वह किसी दूसरे नाम से भी वैसी ही सुगन्ध देगा।

  – शेक्सपियर

- मुझसे न स्वर्ग की बात करो, प्रिय लगता है संसार मुझे।
  मैं इस भूमि पर बलिहारी, यह भी करती है प्यार मुझे।

  – सुमित्रानंदन पंत

- हमें अपनी उन्नति से संतुष्ट नहीं रहना चाहिए, सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

  – महर्षि दयानंद

- शास्त्र पढ़कर भी लोग मूर्ख होते हैं, किन्तु जो उसके अनुसार आचरण करता है, वही विद्वान है।
  केवल विश्वास ही हमारा एक ऐसा संबल है, जो हमें अपनी मंजिल पर पहुँचा देता है।

  – हितोपदेश

- सुधार करने के लिए हमें तपस्या करनी पड़ेगी, चीजों की जड़ तक पहुँचना होगा।

  – स्वामी विवेकानन्द जी

- सुधार आंतरिक होना चाहिए, वाह्य नहीं। आप सद्गुणों के लिये नियम नहीं बना सकते।

  – गिवन

- जो कुछ तुम दूसरों में नापसन्द करते हो उसे अपने में न आने दो।

  – स्प्रैट

- जीवन में ऐसे अवसर भी आते हैं जब निराशा में भी आशा होती है।

  – प्रेमचन्द

- मानव सृष्टि करुणा के लिए है।

  – जयशंकर प्रसाद

- प्रत्येक चीज के विषय में निराश होने की अपेक्षा आशावान होना बेहतर है।

  – गेटे

- जैसे मछली को पानी प्रिय लगता है, लोभी को धन और माता को अपना बालक प्रिय लगता है, वैसे ही भक्त को ईश्वर प्रिय लगता है।

  – कबीर

- पुस्तक प्रेमी सबसे अधिक धनी और सुखी होते हैं।

  – बनारसीदास चतुर्वेदी

प्रेरक–प्रसंग – राजेन्द्र यादव 'आजाद'

देशभक्त पंजाब केसरी लाला लाजपत राय

शहीदों की चिताओं पर लगेगें हर वर्ष मेले।
वतन पर मरने वालों का बाकी यही निशां होगा।

आज वास्तव में शहीदों का निशां ही बाकी रह गया है। देश की आजादी में शहीद हुए अनगिनत देश– भक्तों में से एक थे पंजाब केसरी लाल लाजपत राय।

लाल जी का व्यक्तित्व बहुमुखी था। वे एक सच्चे देशभक्त थे और पारिवारिक गरीबी के कारण कड़ी मेहनत कर वकालत की शिक्षा प्राप्त की और लाहौर में वकालत करने लगे।

लाहौर में रहते हुए इनका सम्पर्क आर्यसमाज से हुआ और ये स्वामी दयानन्द के विचारों से प्रभावित हो देश एवं समाज सेवा में लग गये। पंजाब केसरी लाला लाजपत राय ने गरीबों एवं दलितों के उत्थान के लिए लोक सेवक मण्डल की स्थापना की और निःस्वार्थ भाव से इस दबे हुए शोषित एवं दलित समाज की सेवा की। वहीं दूसरी तरफ बाल गंगाधर तिलक एवं विपिन चन्द्र पाल के साथ अपने क्रांतिकारी विचारों के कारण आपका दल गर्म दल बन गया और लाल–बाल–पाल के नाम से ब्रिटिश हुकुमत भी कांपने लगी।

आपके विचारों से क्रांतिकारियों को सबल मिला तो अंग्रेज आपके नाम मात्र से ही कांपने लगे। जिसके परिणामस्वरूप फिरंगियों ने आपके विरूद्ध देशद्रोह का आरोप लगाते हुए देश निष्कासन का फरमान जारी कर दिया। इन्हीं दिनों 30 अक्तूबर 1926 को साइमन कमिशन के लाहौर पहुँचने का समाचार मिला तो देश भर में **'साइमन कमिशन वापस जाओ'** के नारे लगाये गये और देश में विद्रोह की आग भड़क उठी। जिसके परिणामस्वरूप कमिशन का विरोध कर रही जनता पर फिरंगी सिपाहियों ने लाठियां बरसानी शुरू कर दी और अंग्रेज अधिकारी जनरल साण्डर्स ने जुलूस का नेतृत्व कर रहे लाला लाजपत राय पर भी लाठियों का वार कर दिया, जिससे उनकी छाती एवं शरीर के अन्य अंग टूट गये। मगर देशभक्त जनता ने अपने प्रिय नेता के शरीर पर गिरने वाली लाठियों को अपने शरीर पर झेला और उन्हें तत्काल अस्पताल पहुँचाया गया। मगर स्वाभिमानी लाला जी कुछ समय पश्चात ही घायल अवस्था में सभास्थल पर पहुँचे और अपनी बुलन्द आवाज में अंग्रेजों को ललकारा और लाखों की संख्या में इकट्ठे हुए देशभक्तों को सम्बोधित करते हुए कहा कि– **'मेरे शरीर पर पड़ी एक–एक लाठी ब्रिटिश साम्राज्य के कफन की कील होगी।'**

इस घटना के कुछ दिनों के पश्चात् ही शरीर पर पड़ी लाठियों की चोट के कारण स्वाभिमानी देशभक्त पंजाब केसरी लाला लाजपत राय देश की आजादी के पावन यज्ञ में शहीद हो गये। लाला जी अपना बलिदान देकर सदा के लिए इतिहास के पन्नों में अमर होकर देशवासियों के अन्दर स्वाभिमानी एवं देशभक्ति का अलख जगाकर अपना नाम सुनहरी अक्षरों में लिखकर अमर हो गये। ■

प्रस्तुति : शिखा जोशी (दिल्ली)

प्रेरक विभूति : श्री विनय जोशी

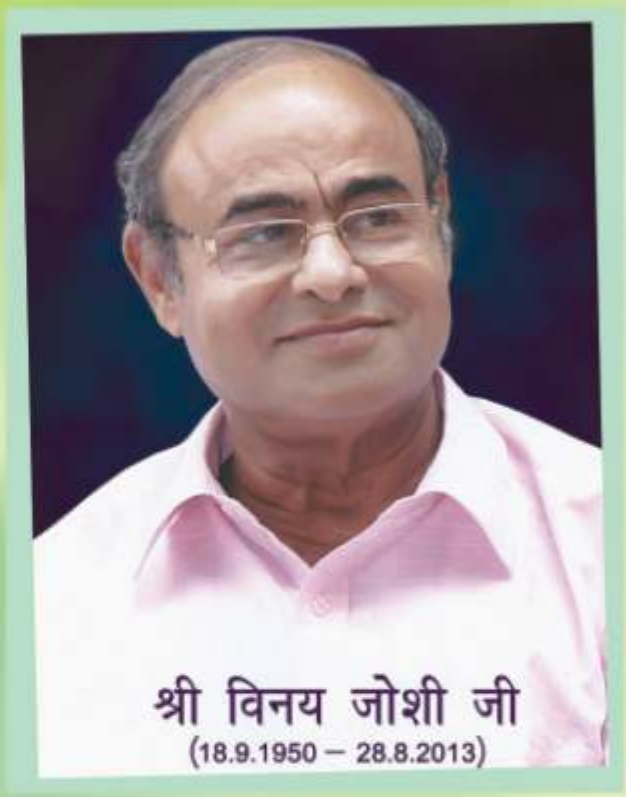

विनय जोशी जी व्यवहारिक ज्ञान से परिपूर्ण, सहजता की जीती–जागती मिसाल थे। श्री विनय जोशी 1973 से 2013 तक हँसती दुनिया के सम्पादक रहे। उन्होंने अपनी 63 वर्ष की आयु में से 40 वर्ष लगातार मेहनत करके इसे एक छोटे से पौधे से विकसित कर एक विशाल वृक्ष बनाया। वे कठिन से कठिन दौर व चुनौतीपूर्ण हालातों से जूझने वाले संघर्षशील पुरुष थे। वे हमेशा कहते थे कि हमें अधिकारों पर नहीं बल्कि अपने कर्त्तव्यों को निभाने पर जोर देना चाहिए। जैसे–जैसे हम अपने कर्त्तव्यों को पूरी लगन और निष्ठा से निभाते हैं, अधिकार अपने आप बिना कोशिश के प्राप्त होने लगते हैं। भक्ति उनकी रग–रग में समाई थी। वे सांसारिक उतार–चढ़ाव से अप्रभावित रहकर सारी उम्र भक्ति मार्ग पर दृढ़ता से आगे बढ़ते रहे।

आत्म–प्रशंसा से दूर, वे एक संवेदनशील इन्सान थे। चाहे खुशी का अवसर हो या गमी का, वे हर अवसर पर व्यक्तिगत रूप से साक्षी रहना अपना दायित्व समझते थे। यह विशेषता उनके व्यक्तित्व की विशालता की परिचायक थी। उनके रहन–सहन में जितनी सादगी थी, वे विचारों के उतने ही धनी थे। उनकी सोच, ज्ञान और प्रतिभा का दायरा बहुत बड़ा था।

विनय जोशी जी एक सुयोग्य शिक्षक की भांति अनेक गंभीर आध्यात्मिक, सामाजिक और शैक्षणिक सवालों का जवाब सरल भाषा में प्रस्तुत कर देते थे। गहन मंथन और अनुभवों के बाद निकला उनका हर वाक्य मन को सकारात्मक ऊर्जा से भर देता था। वे निरंकारी जगत में 'शंका समाधान' व्यक्तित्व के रूप से जाने जाते थे। वे उच्च कोटि के वक्ता और मंच संचालक भी थे। अध्यापन के क्षेत्र में उनके विशेष योगदान के लिए उन्हें 'स्कूल रत्न' पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

आप एक विद्वान लेखक थे। आप में यह गुण था कि आप हर बेजान विषय को भी जीवंत बना देते थे। जो सही लगे, वह बिना किसी संकोच के कहना और लिखना उनकी विशेषता थी। उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखीं, जिनमें संत निरंकारी मण्डल द्वारा प्रकाशित 'महाभारत की कहानियां', 'पढ़ो कहानी', 'भागवद् कथायें', 'पौराणिक कथायें' और 'जंगल का भूत' उल्लेखनीय हैं।

श्री विनय जोशी 28 अगस्त, 2013 को इस नश्वर शरीर को त्यागकर ब्रह्मलीन हुए। आज वे शरीर रूप में हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन अपने विचारों और मूल्यों के रूप में एक मार्गदर्शक बनकर वे सदा हमारे बीच रहेंगे। हम उनके आदर्शों को जीवन में उतारें, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ■

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

मोनू बस की खिड़की वाली सीट पर बैठा, उसके साथ चंदा और फिर दादा जी। उस दिन मौसम भी बड़ा सुहावना हो गया, वे यात्रा का आनंद ले रहे थे।
कुछ देर बाद, उन्होंने बस में आवाजें सुनी कि एक बच्ची बेहोश हो गई है। मोनू और चंदा चौंक पड़े।
मोनू बोला– देखें तो बच्ची को क्या हुआ है? चंदा और दादा जी ने भी कहा हाँ– हाँ, चलो देखते है!

मोनू ने कहा– मैंने एक पुस्तक में सामान्य उपचार के बारे में पढ़ा था, जल्दी से पानी दो, उसे सीट पर बैठाओ, खिड़कियां खोल दो, उसके पास हवा आने दो।
देखो वह बच्ची होश में आ रही है। चंदा के पास कुछ संतरे थे, उसने एक संतरा बच्ची को दे दिया। बच्ची पहले से बेहतर हो गई थी।
अब मोनू और चंदा बच्ची के साथ खेलने लग गये।
यह देखकर बच्ची के मम्मी–पापा ने उन दोनों का धन्यवाद करते हुए कहा– कितने अच्छे बच्चे हैं, ईश्वर तुम्हारी आयु लम्बी करें।

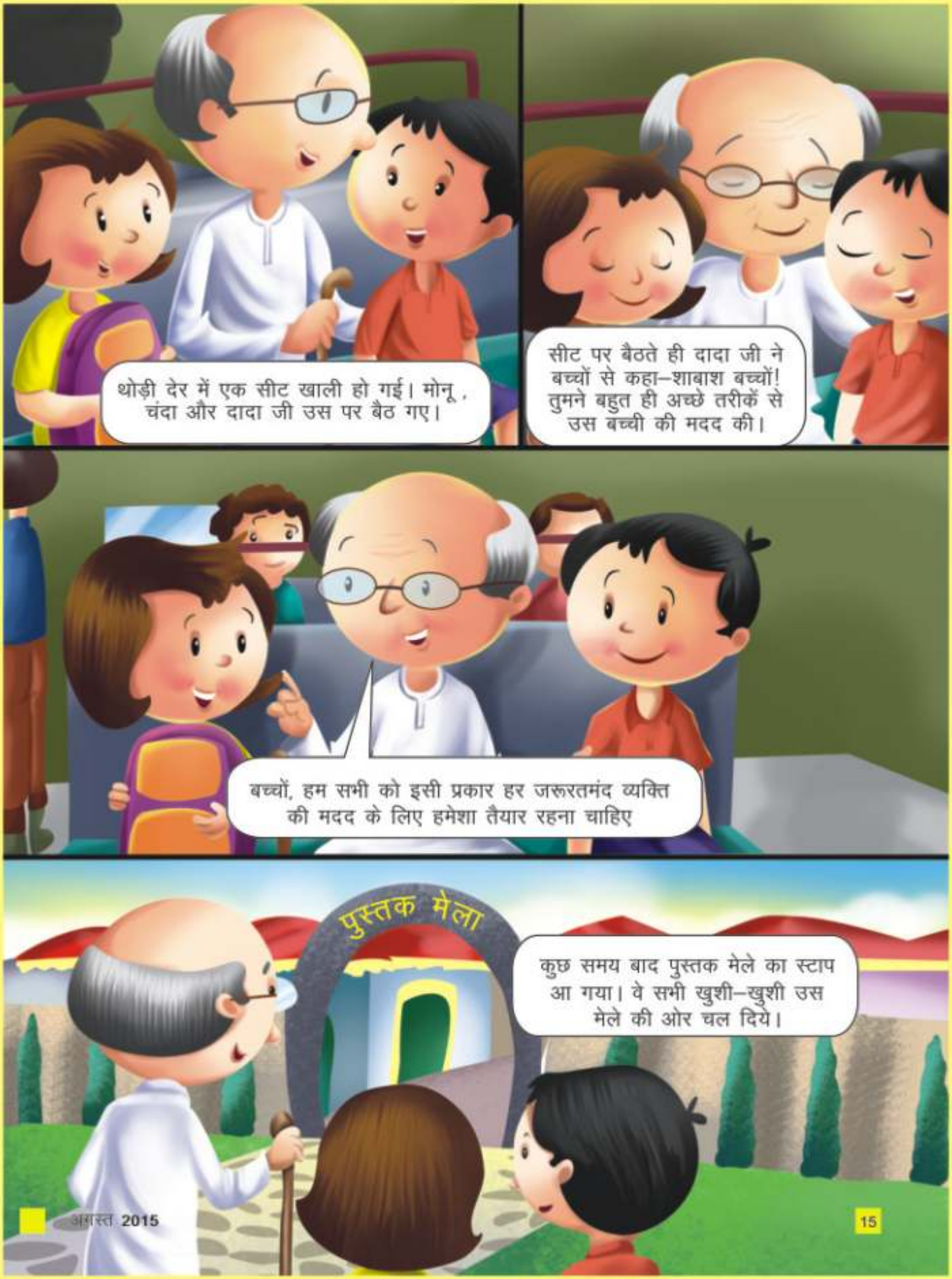
थोड़ी देर में एक सीट खाली हो गई। मोनू, चंदा और दादा जी उस पर बैठ गए।
सीट पर बैठते ही दादा जी ने बच्चों से कहा–शाबाश बच्चों! तुमने बहुत ही अच्छे तरीकें से उस बच्ची की मदद की।
बच्चों, हम सभी को इसी प्रकार हर जरूरतमंद व्यक्ति की मदद के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए
पुस्तक मेला
कुछ समय बाद पुस्तक मेले का स्टाप आ गया। वे सभी खुशी–खुशी उस मेले की ओर चल दिये।

बाल कहानी : कमल सौगानी

महात्मा ललन और लालू

ऊँचे–ऊँचे पहाड़ों वाले जंगल में महात्मा 'ललन हाथी' का एक विशाल आश्रम था। जिसमें जंगल के कई बच्चे पढ़ा करते थे। हाँ, ललन का एक प्यारा शिष्य भी था; जिसका नाम लालू बन्दर था। लालू अपने गुरु की खूब सेवा किया करता।

महात्मा ललन बड़े प्रकृति प्रेमी थे। उन्हें हरे भरे पेड़–पौधों के इर्द–गिर्द भ्रमण करना अच्छा लगता था। फुर्सत के क्षणों में वे अपने शिष्यों के साथ जंगल के खाली स्थानों पर तरह–तरह के पेड़ों के बीज भी बोया करते। इसी कारण जंगल में चारों तरफ हरियाली दिन–पे–दिन बढ़ती ही जा रही थी।

एक दिन महात्मा ललन ने अपने शिष्य लालू बन्दर से कहा– मुझे त्वचा रोग के लिए एक दवा बनानी है, अतः तुम नीम के पेड़ की 40–50 पत्तियों वाली एक टहनी ले आओ।

अपने गुरु की बात सुनते ही लालू उछलता–कूदता एक नीम के पेड़ पर कुल्हाड़ी लेकर चढ़ गया और एक बड़ी–सी टहनी काट लाया।

नीम की बड़ी सी टहनी को देखकर ललन ने लालू से कहा– "बेटा लालू, तुमने यह क्या किया? मैंने तो कुछ पत्तियों वाली टहनी लाने को कहा था और तुम इतनी बड़ी टहनी तोड़ लाये?"

लालू बन्दर खी...खी...खी.... करते हुए हँस कर बोला– "गुरुजी! यहाँ जंगल में नीम के पेड़ों की कोई कमी नही है। हम चाहे जितना नीम बेधड़क तोड़ सकते हैं। हमें रोकने वाला कोई नहीं है।"

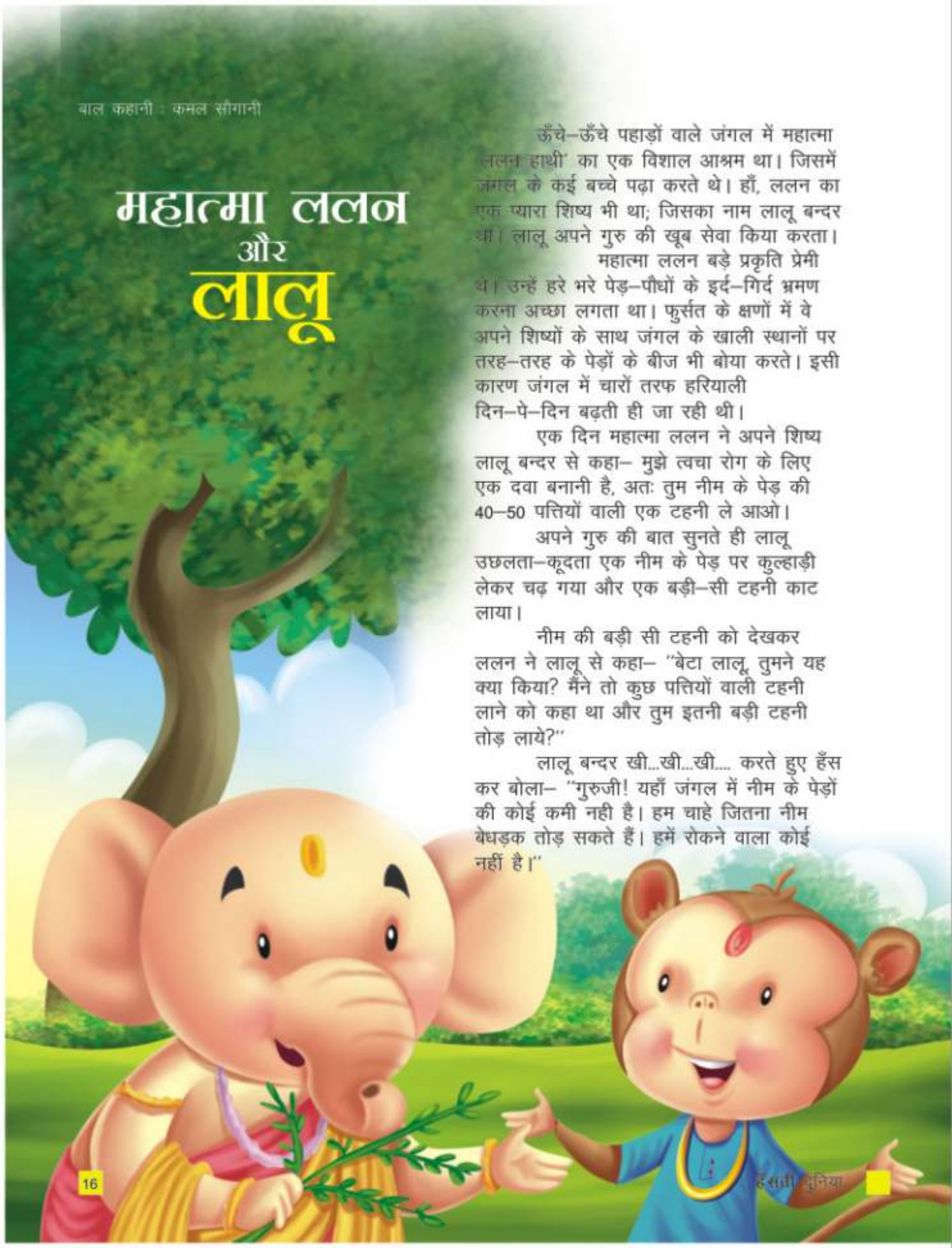

महात्मा ललन बोले– "बेटा! कमी तो नहीं है, लेकिन हमें क्या अधिकार है कि हम बेवजह किसी पेड़ से खिलवाड़ करें? शायद तुम्हें पता नहीं.... कुदरत का प्रत्येक पेड़ का एक–एक पत्ता कीमती है। यदि हर कोई बेवजह इन बेजुबान पेड़ों की उन्मुक्त सांसों पर कुल्हाड़ी चलाकर बड़ी–बड़ी टहनियां या शाखाएं काटने लगेगा तो वह दिन अब ज्यादा दूर नहीं, जब हरे–भरे जंगल ही कट जाएंगे।"

अपने गुरु का प्रकृति प्रेम देखकर शिष्य मन ही मन सोचने लगा– "आज मैंने बिना सोचे–समझे प्रकृति के साथ कितना बड़ा अपराध किया है? अब इस अपराध की सजा तो मुझे मिलनी ही चाहिए।" फिर उसने अपने गुरु से कहा– "गुरुजी! आज जाने–अनजाने में मुझ से जो गलती हुई है। उसके लिए आप मुझे सजा जरूर दें....।"

इस पर महात्मा ललन ने कहा– "बेटा लालू! सजा देने का मुझे क्या अधिकार है? सजा तो सिर्फ ईश्वर ही दे सकता है। हाँ, सजा के बदले तुम धरती की भरपाई करो, मतलब जंगल के खाली स्थलों पर वृक्षारोपण करो....।"

यह सजा लालू बन्दर को बेहद पसन्द आई उसने अपने गुरु की बात गले उतारते हुए तरह–तरह के पेड़ों के असंख्य बीज जंगल के कई खाली स्थानों पर बोए। जब वर्षा का मौसम आया तो बोए गये बीज अंकुरित होकर धीरे–धीरे पौधे बनने लगे।

जंगल में और अधिक हरियाली फैलती देखकर महात्मा ललन खुशी से झूम उठे। उन्होंने अपने प्यारे शिष्य लालू को गले लगाते हुए कहा– "तुम्हारी छोटी सी गलती की सजा व प्रायश्चित ने जंगल में हरियाली की बहार ला दी है। हाँ बेटा! अब एक बात का विशेष ध्यान रखना। हरे भरे पेड़ों पर कभी किसी मनुष्य को कुल्हाड़ी मत चलाने देना। पेड़ों पर कुल्हाड़ी चलाने का मतलब है अपनी सांसों पर कुल्हाड़ी चलाना और पर्यावरण को प्रदूषित करना है।"

लालू बन्दर ने यह बात गले उतार ली और वह अपने साथियों के साथ जंगल की रक्षा करने लगा और वर्षा पूर्व जंगल के खाली स्थानों पर बीज भी बोने लगा। बस, तभी से बन्दरों ने पेड़ों को अपना घर समझा और वे पेड़ों पर ही रहने लगे। उछल–कूद करने लगे। कहते हैं तभी से बन्दर जंगल के पेड़ों की रक्षा कर रहे हैं।

'राष्ट्रीय शिक्षा पुरस्कार'

हँसती दुनिया के लेखक डॉ. परशुराम शुक्ल की कृति को 'राष्ट्रीय शिक्षा पुरस्कार'

केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा वरिष्ठ बाल साहित्यकार डॉ. परशुराम शुक्ल की कृति 'भारत के राजकीय प्राकृतिक प्रतीक' का चयन 'राष्ट्रीय शिक्षा पुरस्कार' हेतु किया गया है। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा संचालित इस पुरस्कार के अन्तर्गत डॉ. शुक्ल को एक लाख रूपये का नकद पुरस्कार दिया जाएगा। डॉ. शुक्ल की कृति का राष्ट्रीय सम्मान हेतु चयन वर्ष 2013 के लिए किया गया है। जून 1947 को कानपुर (उत्तर प्रदेश) में जन्मे डॉ. शुक्ल को इसके पूर्व भी अनेक राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित एवं पुरस्कृत किया जा चुका है।

नेशनल स्पैलिंग बी चैम्पियनशिप

वन्या और गोकुल

(वॉशिंगटन)

स्पैलिंग बी में लगातार आठवें साल भारतवंशी नंबर वन।

भारतवंशियों ने फिर अमेरिका की प्रतिष्ठित नेशनल स्पैलिंग बी चैम्पियनशिप जीत ली है। लगातार आठवीं बार प्रतियोगिता के फाइनल में दूसरी बार भारतवंशियों के बीच मुकाबला हुआ। वन्या शिवशंकर (13) और गोकुल वेंकटाचलम (14) बराबरी पर रहे। दोनों संयुक्त विजेता रहे। वन्या

- भारतवंशियों की आबादी सिर्फ 1 प्रतिशत है, लेकिन इस प्रतियोगिता में पांचवा हिस्सा इनका होता है।
- इस साल 46 सेमीफाइनलिस्ट में 25 भारतवंशी थे।

महासागरों की अम्लता से ही पृथ्वी से विलुप्त हुई चीजें

(लंदन)

एक नये अध्ययन में पाया गया है कि आज से लगभग 25 करोड़ साल पहले पृथ्वी पर सबसे बड़े सामूहिक विलुप्तीकरण का कारण महासागर के जल की अम्लता रही है, जिसने 90 फीसदी से भी ज्यादा समुद्री प्रजातियों और जमीन पर रहने वाले लगभग दो तिहाई जंतुओं को समाप्त कर दिया।

शोधकर्ताओं ने पाया कि पृथ्वी पर महासागरों ने ज्वालामुखियों के प्रस्फुटन से कार्बन डाई ऑक्साइड की भारी मात्रा का अवशोषण किया, जिसके कारण महासागरों की रासायनिक संरचना बदल गई। ये ज्यादा अम्लीय हो गए, जिसका विनाशकारी प्रभाव इस ग्रह के मौजूदा जीवन पर पड़ा।

अध्ययन के अनुसार, वातावरण में शामिल हुई कार्बन डाई ऑक्साइड की जो मात्रा बड़ी संख्या में विलुप्तीकरण का कारण बनी, वह संभवतः आज के जीवाश्म ईंधन भंडारों से भी अधिक थी। हालांकि कार्बन आज के उत्सर्जन की दर के अनुरूप ही विमुक्त होता था। इस विमुक्तीकरण की तीव्र दर महासागर को अम्लीय बनाने में एक महत्वपूर्ण कारक थी।

शोधकर्ताओं ने विलुप्तीकरण के कारण तलाशने वाला जलवायु मॉडल विकसित करने के लिए संयुक्त अरब अमीरात में खोजकर निकाली गई उन चट्टानों का विश्लेषण किया, जो उस समय महासागर के तल पर थीं। एडिनबर्ग विश्वविद्यालय के 'स्कूल ऑफ जियोसाइंसेज' के शोधकर्ता मैथ्यू क्लार्कसन ने कहा, "आज हम मानव द्वारा किए जा रहे कार्बन उत्सर्जनों के परिणामस्वरूप महासागरीय अम्लता में इजाफा देख रहे हैं, ऐसे में ये नतीजे परेशान करने वाले हैं।" (भाषा)

प्रसतुतिः – नेहा गाबा

पहेलियां

1. काशी में मैं रहूं अकेला,
कलकत्ता में दो–दो।
दिल्ली में नहीं पाओगे तुम,
कानपुर में खोजो।

2. आदि कटे तो धूम मचा दे,
मध्य कटे तो बने चचा।
अंत कटे तो चम–चम चमके,
खुरच–खुरच ले माल पचा।

3. पैर नहीं हैं उसके लेकिन,
दूर–दूर तक जाता।
कभी हँसाता कभी रूलाता,
लेकिन बोल न पाता।

4. खाती पीती नहीं कभी कुछ,
हरदम चलती जाए।
पल–पल बड़ा कीमती,
सबको सदा यही समझाए।

5. जैसे को तैसा बताए,
नहीं तनिक भी वह छिपाए।
यदि गिर जाए जमीन पर,
चूर–चूर हो जाए।

6. तीन अक्षर का मेरा नाम,
गरमी देना मेरा काम।
प्रथम कटे तो धूल कहलाऊं,
अंत कटे तो सूर कहलाऊं।

7. हर पल जो मुस्काए,
सदा सबके मन को भाए।
जो कांटो के संग जीवन बिताए,
बतलाओ वो क्या कहलाए?

8. रात में आते बनके नूर,
दिन में हो जाते काफूर।
मामा क्या हैं पूरे जोकर,
बढ़ते घटते रहते अक्सर।

9. पगड़ी ओढ़े पगड़ी छोड़,
कैसा मुर्दा आया।
पड़ा धरा पर नाच दिखाए,
अजब है इसकी काया।

10. शक्तिवान संसार में,
करूं मनुज के काम।
पानी पीते ही तुरंत,
जाऊं मैं सुरधाम।

11. ठंडी हवा संदेश लाती,
तब मैं हूं धरती पर आती।
बच्चों के मन को अति भाती,
किसानों को भी खूब सुहाती।

12. ऊपर से कुछ हरा–भरा,
अंदर से है भरा–भरा।
छिलके दूर हटा लो जी,
बीज नहीं है खा लो जी।

13. काला हूं मतवाला हूं,
और मधुर रस वाला हूं।
तीन वर्ण का नाम बना,
मध्य हटा तो जान बना।

14. मेरे बिन संसार में,
मानव ठोकर खाता।
जिस मानव के पास मैं,
चैन करत दिन रात।

राखी बांधो प्यारी बहना

- महेन्द्र कुमार वर्मा

प्रीत के धागों के बन्धन में,
स्नेह का उमड़ रहा संसार।
सारे जग में सबसे सच्चा,
होता भाई बहन का प्यार।।

नन्हें भैया का है कहना,
राखी बांधो प्यारी बहना।

सावन की मस्तीली फुहार,
मधुरिम संगीत सुनाती है।
मेघों की ढोल थाप पर,
वसुन्धरा मुसकाती है।।

आया सावन का महीना,
राखी बांधो प्यारी बहना।

धरती ने चन्दा मामा को,
इन्द्रधुनषी राखी पहनाई।
बिजली चमकी खुषियों से,
रिमझिम जी ने झड़ी लगाई।।

राजी खुशी सदा तुम रहना,
राखी बांधो प्यारी बहना।।

पहेलियों के उत्तर :

1. 'क' अक्षर, 2. चमचा, 3. पत्र, 4. घड़ी, 5. दर्पण, 6. सूरज, 7. गुलाब का फूल
8. चन्द्रमा, 9. लट्टू, 10. अग्नि, 11. वर्षा, 12. केला, 13. जामुन, 14. बुद्धि।

कहानी : डॉ. सेवा नन्दवाल

बेचारे परिन्दे

कमरे से बाहर निकलकर सजल विस्तृत लॉन में आ गया। अपने आप उसके पैर एक किनारे लगे पेड़ की तरफ बढ़ चले। पेड़ पर एक घास–फूस का घोंसला बनाकर कुछ पंछियों को उसने पाल रखा था। ये मासूम पंछी उसके अच्छे दोस्त बन चुके थे जिनके साथ वह जब–तब खेलता, बातें करता। अपने बनाए हुए घोंसले के पास पहुँचकर वह दंग रह गया। यह क्या... उसका प्रिय घोंसला टूटी–फूटी अवस्था में धूल–धूसरित पड़ा था। उसके पालित चारों पक्षी– दो तोते और दो चिड़िया अधजली अवस्था में मृत पड़े थे। इन मासूम परिंदों की असामयिक मृत्यु पर उसके मुंह से कराह निकल गई और वह बुक्का फाड़कर चीख उठा। जब उसकी आवाज़ सुनकर कोई बाहर नहीं निकला तो वह खुद तेजी से अन्दर की ओर दौड़ पड़ा।

उसे यूं चीखते–चिल्लाते अपने पास आते हुए देख रसोईघर में कार्यरत उसकी मम्मी चिन्तित हो गई– क्या बात है बेटे?

–मम्मी मेरा घोंसला...

–क्या हुआ तुम्हारे घोंसले को?

–मेरा घोंसला बिल्लू ने तोड़–फोड़ दिया– सजल ने शिकायत की।

यह सुनकर मम्मी आश्चर्य में पड़ गई। बिल्लू ऐसा क्यों करेगा?

बिल्लू एक पड़ोस का लड़का था और अक्सर वह सजल के साथ खेलता रहता था।

मम्मी ने पूछा– बिल्लू यहाँ आया था क्या?

–पता नहीं।– सजल ने कहा।

–फिर कैसे उसका नाम लगा रहे हो?– मम्मी ने जानना चाहा।

सजल ने कारण बताया– मम्मी कल जब हम स्कूल में क्रिकेट खेल रहे थे तो बिल्लू हमारे पास खेलने के लिए आया था। हमने मना कर दिया कि अभी नहीं यह मैच खत्म हो जाने दो फिर खेलना। इस पर वह चिढ़ गया और जाते समय धौंस दे गया कि ठीक है मत खिलाओ, मैं तुम्हारा घोंसला तोड़ दूँगा।

सजल को चिल्लाते देख उसके पापा भी वहाँ पहुँच गये– क्या बात है बेटे! आज स्कूल नहीं जाओगे क्या?

–नहीं और आपको भी ऑफिस नहीं जाने दूँगा।– गुस्से से सजल बोला।

–लॉन में इसने जो घोंसला बनाकर चार पंछी पाले हुए थे वे मारे गये– मम्मी ने बताया।

–मेरे चारों दोस्तों की मौत हो गई।– सजल रुआंसे स्वर में बोला।

–यह तो बहुत बुरा हुआ भाई। उनकी मौत शायद अभी लिखी थी।– पापा ने अफसोस जाहिर करते हुए तसल्ली देनी चाहिए।

–जब तक हत्यारे को सजा नहीं मिलेगी मैं नहीं सुनूंगा आपकी बातें।– सजल पिनकते हुए बोला।

पापा फिर आश्चर्य में पड़ते हुए बोले– हत्यारा... यानी किसी ने जानबूझकर उनकी हत्या की है। मगर कौन करेगा उनकी हत्या? बिल्ली–विल्ली होगी?

–बिल्ली नहीं बिल्लू, उसी ने मेरे दोस्तों की हत्या की है।– सजल बोला।

पापा ने समझाने का प्रयास किया– पर बेटे, वह क्यों मारेगा? वह तुम्हारा दोस्त है।

सजल ने रोषपूर्वक कहा– काहे का दोस्त, एक नम्बर का बेवकूफ है वह। कल सबके सामने उसने मुझे धौंस दी थी कि मेरे घोंसले को तहस–नहस कर देगा।

–ऐसा उसने गुस्से में कहा होगा। गुस्से में आदमी कुछ भी बक जाता है।– पापा ने समझाने की कोशिश जारी रखी।

–नहीं पापा उसी ने यह घिनौनी हरकत की है। उसी ने मेरे घोंसले को तोड़ा है, और कोई क्यों तोड़ेगा?– सजल ने दोहराया।

–अच्छा चलो मुझे दिखाओ।– पापा ने कहा।

सजल उन्हें टूटे हुए पड़े घोंसले के पास ले गया। पापा ने बारीकी से निरीक्षण करते हुए कहा– बेटा, इसमें तो आग लगी है। आग से जलकर यह हादसा हुआ है।

–पापा बिल्लू बड़ा खतरनाक लड़का है। वह आग भी लगा सकता है।– सजल ने कहा।

–आग बिजली से लगी है। यहाँ बिजली का बल्ब क्या कर रहा है?

–यह बल्ब मैंने लटकाया था रोशनी के लिए।– सजल ने बताया।

पापा ने 'वायर' का मुआयना करते हुए कहा– यह देखो... यह एक नंगा वायर निकला पड़ा है। इसमें करंट है और इसी की वजह से घास में आग लगने के कारण घोंसला जला और उसमें रहने वाले पंछी जल गये।

–लेकिन पापा...– सजल ने कहना चाहा तो पापा ने टोक दिया– यह बताओ यहाँ बल्ब लगाने की जरूरत क्या थी? पंछियों को तो वैसे भी अंधेरे में दिखता है।

सजल को अपनी गलती समझ में आ गई। वह धीमे स्वर में बोला– पर पापा मुझे तो नहीं दिखता। मैंने अपने लिए लगाया था।

–यह आइडिया तुम्हारे दिमाग में आया कहाँ से?– पापा ने जानना चाहा।

–दरअसल मैंने एक बार पढ़ा था... पता नहीं कौन सा पक्षी है जो अपना घोंसला बनाने में जुगनुओं का उपयोग करता है ताकि उनकी चमक से रोशनी रहे।– झिझकते हुए सजल ने बताया।

पापा मुस्कुरा दिये– बेकार अपने दोस्त पर शक कर रहा था।

तब तक बिल्लू भी दौड़ता हुआ वहाँ पहुँच गया, बोला– सजल, मैंने सुना तेरा घोंसला टूट गया और उसमें रखे सभी परिंदे मर गये।

–हाँ यह देख न!– सजल ने इशारे से बताया।

–मुझे बड़ा अफसोस है। चारों कितने सुन्दर और मासूम थे। पर यह सब हुआ कैसे? देख मैंने कुछ नहीं किया नहीं तो तू मेरा नाम लगाये।– बिल्लू ने सफाई देनी चाहिए।

–मुझे मालूम है। बिजली के करंट से यह दुर्घटना हुई।– सजल ने बताया।

–यह तो बहुत बुरा हुआ यार, बेचारे भोले–भाले पंछियों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।– बिल्लू ने सहानुभूति दर्शाते हुए कहा।

–यह सब मेरी गलती से हुआ।– सजल ने दुःखी स्वर में कहा।

–चल अब जो होना था वह हो गया। तू चिंता मत कर...। मेरे मामा जी ने बहुत सारे परिंदे पाल रखे हैं। शाम को मेरे साथ चलना... वहाँ से दो–चार ले आएंगे।– बिल्लू ने कहा।

–सच?– सजल को जैसे यकीन नहीं हुआ।

–हाँ सच, मेरे मामा जी बहुत अच्छे हैं। वे जरूर दे देंगे।– बिल्लू ने यकीन दिलाने की कोशिश की। सजल ने कृतज्ञ भाव से बिल्लू की ओर देखा।

बिल्लू ने चेतावनी दी– लेकिन अब यहाँ लाइट नहीं लगाना।

–लगाऊँगा मगर बहुत दूर रखूंगा। पहले तो बिल्कुल अंदर लगा रखी थी।– सजल ने अपनी गलती स्वीकारते हुए कहा।

–चल स्कूल नहीं चलेगा क्या?– बिल्लू ने पूछा।

–थोड़ी देर से जाऊँगा। पहले इन बेचारे परिन्दों को दफना दूँ।– सजल ने भीगे नेत्रों से कहा।

–चल मैं भी तेरा साथ देता हूँ। मेरे भी दोस्त थे वे।– बिल्लू ने सजल के कंधे पर हाथ रखते हुए ढांढस बंधाते कहा। दोनों दोस्त परिन्दों की अंतिम क्रियाकर्म में लग गये।

वर्ग पहेली

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा (रिवाड़ी)

1		2	■	3	
	■	4			■
5	6		■		■
■		■	7		8
9		10	■	■	
	■	11		12	■
13			■	14	

बाएँ से दायें :→

1 2014 में भारत के ..... सत्यार्थी को नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ।

3 मामी का पति।

4 भारत की पहली महिला शासक ..... सुल्तान थी।

5 दस रुपये के नोट पर भारतीय संसद का चित्र छपा होता है। (सही / गलत)

7 भारत का राष्ट्रपति बनने के लिए उम्र कम से कम कितने साल होनी चाहिए?

9 महात्मा गाँधी के राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण ..... थे।

11 अमीर खुसरो सुल्तान अलाउद्दीन ..... का दरबारी कवि था।

13 शुद्ध शब्द छांटिए : लढका / लड़का

14 अंधेरे का एक पर्यायवाची शब्द।

ऊपर से नीचे : ↓

1 भारत के पहले वायसरॉय का नाम लार्ड .... था। (कैनिंग / कर्जन)

2 'देवदास' पुस्तक के लेखक ..... चन्द्र चटर्जी थे।

3 उत्तर प्रदेश की पहली दलित महिला मुख्यमंत्री।

6 क्षेत्राफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा निर्वाचन क्षेत्र।

8 साँप का एक पर्यायवाची शब्द।

9 भगवान श्री कृष्ण का बचपन जिस गाँव में बीता था।

10 पुल्लिंग: लेखक, स्त्रीलिंग: ..... ।

12 हार का विपरीत शब्द।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में हैं)

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर **'र'** अक्षर पर खत्म होते हैं। पैन या पैन्सिल उठाइए और प्रश्नचिन्ह के बाद उत्तर लिखते जाइए।

1. अमरीका की मुद्रा कौन–सी है?
2. 'भारत रत्न' पुरस्कार प्राप्त करने वाली पहली गायिका कौन है?
3. 'रोमियो एण्ड जूलियट' का लेखक कौन था?
4. सरस्वती का वाहन क्या है?
5. झारखण्ड राज्य पहले किस भारतीय राज्य का हिस्सा था?
6. एशियाई खेलों का आयोजन कितने साल बाद होता है?
7. किस नदी को 'बंगाल का शोक' कहते हैं?
8. दूध की शुद्धता की जाँच करने वाले यंत्र को क्या कहते हैं?
9. कौन–सा पाकिस्तानी क्रिकेटर 'रावलपिंडी एक्सप्रैस' के नाम से मशहूर था?
10. किस महीने की दो तारीख को 'अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस' के रूप में मनाया जाता है?
11. भारत के राष्ट्रगान के लेखक कौन थे?
12. अकबर के दादा का क्या नाम था?
13. पंडित शिव कुमार शर्मा किस वाद्ययंत्र से सम्बन्धित है?
14. राजस्थान के किस शहर को 'झीलों का शहर' कहा जाता है?
15. गंगा के किनारे बसे उत्तराखण्ड के किस शहर में हर की पौड़ी है?

(सही उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें)

तिरंगे को सलाम

बालगीत : गफूर 'स्नेही'

हर छात्र सजा धजा है।
ढमढम बैंड बजा है।।
बिगुल भी अविराम
तिरंगे को फहराया है।।
उसको करें प्रणाम।
अदब से करें सलाम।।

यह कैसा है संयोग।
देख रहे सारे लोग।।
इन्द्रधनुष भी निकला
सतरंगा लिए ललाम।।
उसको करें प्रणाम।
अदब से करें सलाम।।

आजादी के गूंजे तराने।
हम सुन के सीना ताने।।
जोश उमंग उत्साह की
लहरें उठती उद्दाम।।
उसको करें प्रणाम।
अदब से करें सलाम।।

तिरंगा ध्वज

बाल कविता : मोती विमल

इन नन्हें–नन्हें हाथों से
तिरंगा थाम चला ऐसे,
या मानो कोई शेर बबर
शिकार झपटता हो जैसे।

सीना ताने वज्र कठोर
पांवों में पवन समाया हो,
देश प्रेम का रग–रग में
लाल खून गरमाया हो।

केसरिया कहता कुर्बानी
श्वेत शान्ति का पूजक है,
चक्र हमारा गतिमान
हरा समृद्धि सूचक है।

गौरव से कर सिर ऊँचा
राष्ट्र ध्वज को लहराये,
याद शहीदों की कर के
हर वर्ष तिरंगा फहराये।

विशेष लेख : डॉ. परशुराम शुक्ल

ड्यूगाँग (Dugong) अंडमान और निकोबार द्वीप समूह का राज्य पशु

ड्यूगाँग एक समुद्री जीव है। इसे अंग्रेजी में 'सी काऊ' कहते हैं अर्थात् समुद्री गाय कहते हैं। जीव वैज्ञानिकों ने सागर में पाये जाने वाले स्तनधारी तीन जलचरों को इनके शान्त स्वभाव और चरने की आदत के कारण समुद्री गाय कहा है। ये है – ड्यूगाँग, गनाती और स्लेटर सी काऊ। इनमें से स्टेलर सी काऊ धरती से पूरी तरह विलुप्त हो चुकी है।

ड्यूगाँग एक अत्यन्त असुन्दर जीव है तथा देखने में यह सील की तरह लगती है। पहले ये समझा जाता था कि ड्यूगाँग अपनी सुरीली आवाज द्वारा जहाजों को चट्टानों की ओर आकर्षित करती है किन्तु इसके अध्ययन के बाद यह मालुम हुआ कि इसकी आवाज बड़ी भद्दी होती है तथा यह सुअर के समान केवल घुरघुराने की आवाज ही निकाल सकती है। सागर में सुरीली आवाज चोंच मछली निकालती है।

ड्यूगाँग पूर्व में सोलेमन द्वीपों से पश्चिम में लाल सागर तक तथा फिलीपीन्स, फारस की खाड़ी, आस्ट्रेलिया और मोजाम्बिक में पायी जाती है। यह किसी समय प्रशान्त महासागर के उष्णकटिबंधीय तटों और मेडागास्कर से लेकर आस्ट्रेलिया के उत्तर–पूर्वी तटों तक बहुत अधिक संख्या में थी किन्तु अब उत्तरी ऑस्ट्रेलिया को छोड़कर शेष स्थानों पर तो इसकी स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गई है और कुछ स्थानों पर तो यह विलुप्ति के कगार पर पहुँच गयी है। विश्व में उत्तरी आस्ट्रेलिया एक मात्र ऐसा स्थान है, जहाँ सागर–तटों पर इसकी संख्या बढ़ी है। ड्यूगाँग की एक जाति हिन्द महासागर में भी पायी जाती है। इसे भारत और श्रीलंका के सागर तटों, कच्छ की खाड़ी, मन्नार की खाड़ी, पाक की खाड़ी तथा अण्डमान द्वीपों के आसपास बहुत बड़ी संख्या में देखा जा सकता है।

ड्यूगाँग झुण्ड में रहने वाला जलचर है। बीसवीं सदी के आरम्भ तक इसके बहुत बड़े–बड़े झुण्ड देखने को मिलते थे, जिनमें इसकी संख्या हजारों में होती थी, किन्तु अत्यधिक शिकार के कारण अब इसे इधर–उधर बिखरी हुई अवस्था में अथवा छोटे–छोटे झुण्डों में ही देखा जा सकता है।

ड्यूगाँग हमेशा पानी के भीतर डूबी हुई रहती है, किन्तु इसके नथुनों के सिरे बाहर रहते हैं। यह पानी के भीतर कुछ गहराई तक गोता भी लगा सकती है, किन्तु इसे आधे मिनट से लेकर साढ़े आठ मिनट के मध्य साँस लेने के लिए पानी की सतह पर आना पड़ता है। इसीलिए यह बड़ी सरलता से मछुआरों द्वारा मारी और पकड़ी जाती है। ड्यूगाँग बहुत सीधी और शान्त स्वभाव की होती है तथा अपने शिकार के समय भी आक्रामक रूख नहीं अपनाती।

ड्यूगाँग कभी–कभी मुहानों से होती हुई

नदियों के भीतर कुछ ऊँचाई तक पहुँच जाती है, किन्तु यह सागर तटों के बहुत किनारे अथवा जमीन पर प्रायः नहीं आती, क्योंकि इसकी पसलियां बहुत कमजोर होती हैं, अतः जमीन पर साँस लेने में इसे बहुत परेशानी होती है। इसके साथ ही तेज धूप में जमीन पर आने से इसे सूर्यदाह (सन बर्न) भी हो जाता है।

ड्यूगाँग हमेशा अपने परिवार के साथ अथवा समूहों में रहती है। इसके समूह के सभी सदस्य भोजन के लिए एक स्थान पर एकत्रित होते हैं। ड्यूगाँग की दिनचर्या बड़ी नियमित होती है। यह दिन के समय तटों से दूर पानी की सतह के कुछ नीचे धूप सेंकती है तथा इस मध्य थोड़ी–थोड़ी देर में सांस लेने के लिए सतह पर आती है। शाम के समय ड्यूगाँग भोजन के लिए उथले पानी में आ जाती है और मौसम प्रतिकूल होने पर अर्थात् खराब मौसम में सुरक्षित स्थानों पर चली जाती है। ड्यूगाँग की दिनचर्या पर ज्वार–भाटे एवं बदलते हुए मौसम का बहुत कम प्रभाव पड़ता है।

ड्यूगाँग की शारीरिक संरचना बड़ी विचित्र होती है। इसकी लम्बाई 2.4 मीटर से लेकर 2.7 मीटर तक होती है तथा वजन लगभग 400 किलोग्राम होता है, किन्तु कभी–कभी 5 मीटर लम्बी ड्यूगाँग भी देखने को मिल जाती है। भारतीय सागरों में पायी जाने वाली ड्यूगाँग लगभग 3 मीटर लम्बी होती है एवं इसका वजन 300 किलोग्राम से 400 किलोग्राम के मध्य होता है। इसका शरीर बहुत भारी होता है एवं इसकी बनावट तारपीडो के समान होती है। ड्यूगाँग की त्वचा बहुत मोटी और मजबूत होती है तथा इसका रंग 'ग्रे' होता है। इसकी त्वचा पर घने और लम्बे बाल नहीं होते। सामान्यतया त्वचा पर 5 से 7 सेंटीमीटर की दूर पर 6–7 मिलीमीटर लम्बे बाल होते हैं। ड्यूगाँग के नथुने इसके सर के ऊपरी भाग पर होते हैं, अतः इसे साँस लेने के लिए पुरा सर पानी के बाहर नहीं निकालना पड़ता। इसके चौड़े नथुनों के दोनों ओर दो छोटी–छोटी आंखें होती हैं तथा आँखों के समान ही कान के छिद्र भी बहुत छोटे होते हैं। इसकी दृष्टि तो बहुत कमजोर होती है, किन्तु श्रवण शक्ति बहुत अच्छी होती है। ड्यूगाँग का थूथुन सील की तरह होता है और इस पर कड़े बाल होते हैं। इसके आगे के हाथ (फिलपर्स) बहुत छोटे होते हैं और इसे तैरने में सहयोग नहीं करते। इसकी पूँछ ह्वेल के समान चपटी और पैडेल जैसी होती है। इसी की सहायता से यह तैरती है।

प्रायः चरने वाले जीवों के दाँत हमेशा बढ़ते रहते हैं क्योंकि चरने से दाँतों की ऊपरी सतह निरंतर घिसती रहती है, अतः जड़ों से दाँत बढ़ते रहते हैं। ड्यूगाँग के गालों के दाँत लगातार किन्तु बड़ी धीमी गति से आगे की ओर बढ़ते रहते हैं। जब इसके आगे

के दाँत घिस कर गिर जाते हैं तो जबड़े के पीछे से नये दाँत आकर इनका स्थान ले लेते हैं।

ड्यूगाँग को कुछ जीव वैज्ञानिकों ने हाथी का निकट सम्बन्धी बताया है, क्योंकि इसके ऊपरी जबड़ों में हाथी के दाँतों के समान बाहर निकले हुए गजदंत (टस्क) होते हैं तथा इनका विकास सामान्य दाँतों की तरह न होकर गजदंतों के समान होता है। नर ड्यूगाँग के गजदंत हमेशा बाहर निकले रहते हैं किन्तु मादा के गजदंत प्रायः दिखाई नहीं देते। ड्यूगाँग के गजदंतों की उपयोगिता भी हाथी के गजदंतों के समान अभी तक अज्ञात है। ड्यूगाँग के शरीर की हड्डियां भी हाथी के समान भारी होती हैं तथा मादा ड्यूगाँग के स्तन भी हथिनी के समान भीतर की ओर रहते है। यद्यपि हाथी जमीन का प्राणी है और ड्यूगाँग जलचर है, किन्तु इन समानताओं से यह लगता है कि दोनों जीवों में कुछ न कुछ सम्बन्ध अवश्य है।

ड्यूगाँग एक शाकाहारी जलचर है। इसका प्रमुख भोजन विभिन्न प्रकार के जलीय पौधे हैं, किन्तु उष्णकटिबन्धीय तटों के उथले पानी में उगने वाली ईल घास इसे विशेष रूप से पसंद है। ड्यूगाँग उन स्थानों पर भोजन करना अधिक पसंद करती है, जहाँ भरपूर जलीय पौधे हों एवं सागर तट शान्त, निर्जन और सुरक्षित हो। कभी–कभी यह तट के बहुत पास आकर भोजन करती है और कभी–कभी तो यह भोजन की खोज में किनारों पर आ जाती है, जहाँ इसे अपने आगे के हाथों (फिलपर्स) की सहायता से चलते हुए देखा जा सकता है। ड्यूगाँग के भोजन करने का ढंग बड़ा विचित्र होता है। यह सर्वप्रथम अपने मजबूत जबड़ों से पौधों को खींच कर जड़ से उखाड़ती है फिर पौधे और पौधे की जड़ों में भरी हुई रेत साफ करने के लिए इसे पानी में डालकर हिलाती है और अन्त में साफ पौधे को खा जाती है। इसके साथ ही इसे जमीन पर उगे हुए वृक्षों की पानी में लटकती पत्तियों को भी तोड़–तोड़ कर खाते हुए देखा गया है। ड्यूगाँग जितने पौधे और पत्तियां खाते हैं, उससे अधिक नष्ट करती हैं। सागर तटों पर पानी की सतह पर उतराती हुई पत्तियों को देखकर सरलता से, यहाँ ड्यूगाँग के होने का अनुमान लगाया जा सकता है।

ड्यूगाँग भोजन करते समय बहुत सावधान रहती है तथा साधारण–सी आवाज से सचेत हो जाती है और खतरे की आशंका होते ही किसी सुरक्षित स्थान की ओर भाग जाती है।

मादा ड्यूगाँग का गर्भकाल 11 माह होता है। यह पानी में एक बच्चे को जन्म देती है, किन्तु कभी–कभी जुड़वाँ बच्चे भी होते हुए देखे गये हैं। बच्चे के जन्म के समय जन्म देने वाली मादा के साथ नर एवं कुछ अन्य मादाएँ भी रहती हैं। ड्यूगाँग का नवजात बच्चा स्वयं तैर कर अथवा दूसरों की सहायता से पानी की सतह पर आता है और जीवन की पहली साँस लेता है। कभी–कभी गर्भवती मादा जमीन पर आकर बच्चे को जन्म देती है, किन्तु ऐसा कम ही होता है। मादा ड्यूगाँग मानव की तरह अपने बच्चे की बहुत अच्छी तरह से देखभाल करती है। इसीलिए इसे जलपरी कहते हैं।

यह अपने बच्चे को पीठ पर लेकर घुमाती है, समय–समय पर दूध पिलाती है और तैरना सिखाती है। ड्यूगाँग अपने बच्चे का संतुलन बनाये रखने के लिए दूध पीते समय उसका एक हाथ पकड़े रखती है। ड्यूगाँग का बच्चा मादा के साथ बहुत लम्बा समय व्यतीत करता है और यदि सभी खतरों से बचा रहा तो लगभग 20 वर्ष की आयु तक जीवित रहता है।

ड्यूगाँग के प्राकृतिक शत्रु बहुत कम है। इसके प्रमुख शत्रु हैं– मगर और शार्क। मुहाने का मगर ड्यूगाँग के बच्चों को अपना आहार बनाता है तथा शार्क वयस्कों और बच्चों दोनों का शिकार करती है।

ड्यूगाँग मगर और शार्क से तो किसी तरह अपनी रक्षा कर लेती है, किन्तु यह मानव से नहीं बच पाती। इसके मांस हेतु मानव सदियों से ड्यूगाँग का शिकार कर रहा है। मृत ड्यूगाँग के शरीर के अन्य भागों को दूसरे उपयोग में लाया जाता है। इसकी त्वचा से कड़ा चमड़ा बनाया जाता है, जिससे जूतों और सैन्डिलों के सोल बनते हैं तथा चर्बी से ग्रीस बनायी जाती है। ड्यूगाँग के शरीर के कुछ भागों का उपयोग देशी दवाएँ तैयार करने में किया जाता है। मेडागास्कर में इसके दाँतों के चूरे से एक देशी दवा तैयार की जाती है, जो फूड प्वाइजनिंग के प्रभाव को समाप्त कर देती है। इसी तरह इसके सर की चर्बी से एक बाम तैयार किया जाता है जो सरदर्द में बड़ा आराम पहुँचाता है।

ड्यूगाँग का शिकार हमेशा हारपून द्वारा किया जाता है अथवा जाल डाल कर इसे पकड़ा जाता है। ड्यूगाँग का पूरा का पूरा परिवार हमेशा एक साथ रहता है तथा परिवार के सभी सदस्यों में एक दूसरे के प्रति इतना लगाव होता है कि जहाँ एक सदस्य जाता है, वहीं सब सदस्य पहुँच जाते हैं। इससे ड्यूगाँग का शिकार करना बड़ा आसान हो जाता है। ड्यूगाँग का इतना अधिक शिकार किया गया है कि अनेक स्थानों पर यह विलुप्ति के कगार पर पहुँच गयी है तथा कुछ स्थानों पर यह पूरी तरह विलुप्त हो गयी है। इसे बचाने के लिए इसका नाम 'रेड डाटा बुक' में सम्मिलित कर लिया गया है तथा इसे विरल समुद्री जीव घोषित कर दिया गया है।

लघुकथा : चाँद मोहम्मद घोसी

राख ने बदली तकदीर

रामदीन एक छोटा सा किसान था। उसमें एक बहुत बड़ा अवगुण था। वह छोटी–छोटी बात पर अपना आपा खो देता था। एक दिन अपनी पत्नी से झगड़ने के बाद क्रोधित होकर उसने अपनी झोंपड़ी को तीली दिखा दी।

झोंपड़ी धू–धू कर जल गई। पत्नी रोते–बिलखते हुए कहने लगी– हे भगवान! अब हम क्या करेंगे!

रामदीन का क्रोध ठंडा हुआ तब उसकी भी आँखे खुल गई। वह भी पछताते हुए बोला, "मैं–मैं इसे जलाना थोड़े ही चाहता था...। क्रोध ने मुझे शैतान बना दिया। चलो, अब इसकी राख को बेच दें। मैं कुछ बोरियों का इंतजाम करता हूँ।" कहकर रामदीन ने पांच बोरियां राख से भर डाली।

पत्नी बोली, 'कौन खरीदेगा इसे?'

"क्या पता, शायद कोई खरीद ही ले।" अपनी बैलगाड़ी में बोरियां रखकर, पत्नी को संग बैठाकर रामदीन पड़ौस के शहर की मंडी में चला गया।

पर मंडी में किसी ने रामदीन की राख की बोरियों पर नज़र तक नहीं डाली।

"हम बेकार ही अपना समय बर्बाद कर रहे हैं। सुबह से शाम हो गई कोई खरीदार नहीं आया।" पत्नी ने रामदीन को चिंतित होकर कहा।

"खैर... कोई बात नहीं, कल फिर कोशिश करेंगे।" आज रात यहीं सार्वजनिक धर्मशाला में ठहर जाते हैं।" और रामदीन ने धर्मशाला के बाहर अपनी बैलगाड़ी खड़ी कर दी।

चोरों की नज़र बोरियों पर पड़ी तो उन्होंने रामदीन के निकट जाकर पूछा, "क्यों भैया, इन बोरियों में क्या है?"

"मेरी जीवनभर की कमाई है।" कहकर रामदीन धर्मशाला में चला गया और कमरा बुक कराकर दोनों पति–पत्नी गहरी नींद में सो गये।

अंधेरी रात थी। चोरों ने खुसर–फुसर करते हुए एक–दूसरे को बताया, "उनमें जरूर काफी माल होगा। क्यों न हम उनकी जगह चोरी की गई अपनी बोरियां रख दें।" यह सलाह करके उन्होंने बोरियों की अदल–बदल कर ली।

"जल्दी करो! इससे पहले कि किसान और उसकी पत्नी जागे हमें खिसक जाना है।" यह कहकर वे चोर अपने ट्रेक्टर में बैठ कर 'नौ दो ग्यारह' हो गये।

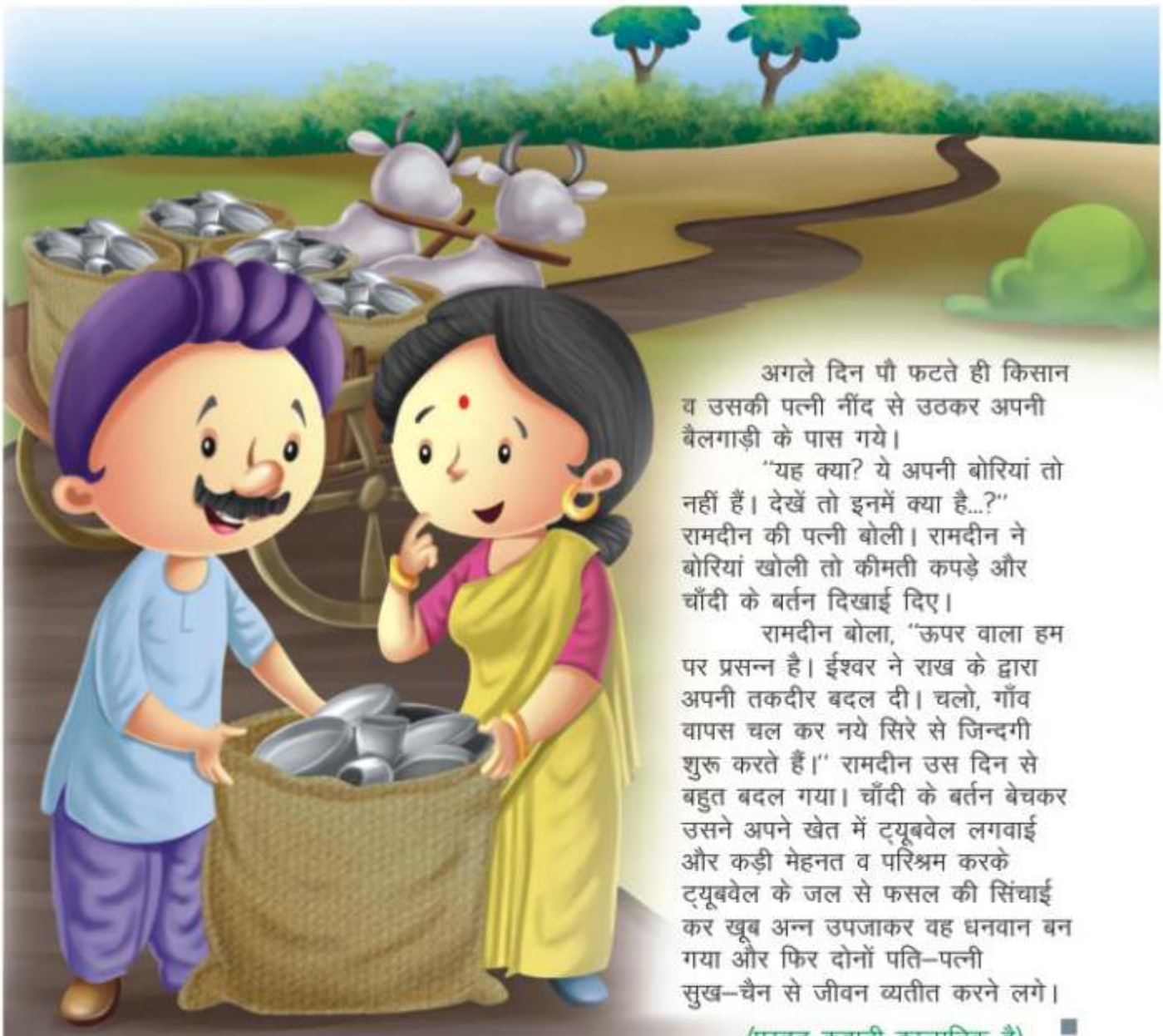

अगले दिन पौ फटते ही किसान व उसकी पत्नी नींद से उठकर अपनी बैलगाड़ी के पास गये।

"यह क्या? ये अपनी बोरियां तो नहीं हैं। देखें तो इनमें क्या है...?" रामदीन की पत्नी बोली। रामदीन ने बोरियां खोली तो कीमती कपड़े और चाँदी के बर्तन दिखाई दिए।

रामदीन बोला, "ऊपर वाला हम पर प्रसन्न है। ईश्वर ने राख के द्वारा अपनी तकदीर बदल दी। चलो, गाँव वापस चल कर नये सिरे से जिन्दगी शुरू करते हैं।" रामदीन उस दिन से बहुत बदल गया। चाँदी के बर्तन बेचकर उसने अपने खेत में ट्यूबवेल लगवाई और कड़ी मेहनत व परिश्रम करके ट्यूबवेल के जल से फसल की सिंचाई कर खूब अन्न उपजाकर वह धनवान बन गया और फिर दोनों पति–पत्नी सुख–चैन से जीवन व्यतीत करने लगे।

(प्रस्तुत कहानी काल्पनिक है)

सामान्यज्ञान प्रश्नोत्तरी के उत्तर :

1. डालर 2. लता मंगेशकर 3. विलियम शेक्सपीयर 4. मोर 5. बिहार का 6. चार साल बाद 7. दामोदर को 8. लेक्टोमीटर 9. शोएब अख्तर 10. अक्टूबर की 11. रवींद्र नाथ टैगोर 12. बाबर 13. संतूर से 14. उदयपुर को 15. हरिद्वार में।

वर्गपहेली का उत्तर

1 कै	ला	2 श	■	3 मा	मा
निं	■	4 र	जि	या	■
5 ग	6 ल	त	■	व	■
■	द्वा	■	7 पैं	ती	8 स
9 गो	ख	10 ले	■	■	र्प
कु	■	11 खि	ल	12 जी	■
13 ल	ड़	का	■	14 त	म

भैया से पूछो

प्रः सहनशक्ति बहुत कम है। छोटी–छोटी बातों पर गुस्सा जल्दी आता है। कोई ऐसा उपाय बताएं जिससे सहनशक्ति बढ़े?

उः प्रतिदिन प्रभु का सुमिरण करें।

प्रः वास्तविक पुरुषार्थ से क्या अभिप्राय है?

उः मनुष्य द्वारा उठाये गये सार्थक कदमों का सकारात्मक फल।

–रामशंकर (बिलासपुर)

प्रः निराकार प्रभु हर पल हमारे साथ होता है, फिर भी हम इसे भूल क्यों जाते हैं?

उः हमारा शरीर माया (भौतिक तत्वों) व परम–तत्व (आत्मा) का समन्वय है। इसलिए शरीर का माया से भ्रमित होना भी स्वाभाविक है परन्तु सुमिरण, सत्संग व सेवा के द्वारा मन भटकन से दूर हो सकता है।

प्रः हम पढ़ाई के लिए बैठते हैं तो हमारा मन पढ़ाई में नहीं लगता। हमें क्या करना चाहिए?

उः कुछ भी पढ़ते समय थोड़ा बुदबुदा कर पढ़ें। फिर पढ़े हुए अंश को लिखें। इस प्रकार करने से दिमाग एकाग्र होता है।

–मीनाक्षी आनन्द (कानपुर)

प्रः अगर कुछ समझ में न आये तो क्या करना चाहिए?

उः अपने से अधिक बुद्धिमान और समझदार इन्सान के पास जाकर उनसे अपने मन की बात कह कर उनसे समझना चाहिए।

–पूनम प्रसाद (गंगटोक)

प्रः कोई हमारे सामने ही हमारी बुराई करें तो हमें क्या करना चाहिए?

उः मुस्कुरा कर आगे बढ़ जाना चाहिए।

–कमल नागपाल (खण्डवा)

प्रः ईश्वर तक पहुँचने का सबसे सरल साधन क्या है?

उः पूर्ण सद्गुरु की शरण में आना व सर्वस्व समर्पण कर देना।

प्रः भैया जी! सच्चा परोपकार आप किसे कहेंगे?

उः ऐसा कर्म जिससे दूसरों का कल्याण होता हो व किसी का भी नुकसान न हो।

प्रः अनजाने में यदि कोई गलती हो जाए तो उसे कैसे दूर किया जाए?

उः पूरी तरह जागरूक रहकर गलती स्वीकार करें व उसे न दोहराने की शपथ लें। गलती के प्रभाव को तो हँसकर झेलना ही होगा।

–दीपक जेस्वानी (हिंगनघाट)

प्रः प्रश्न उः उत्तर

लघु कथा : राजेन्द्र सिंह

आजादी

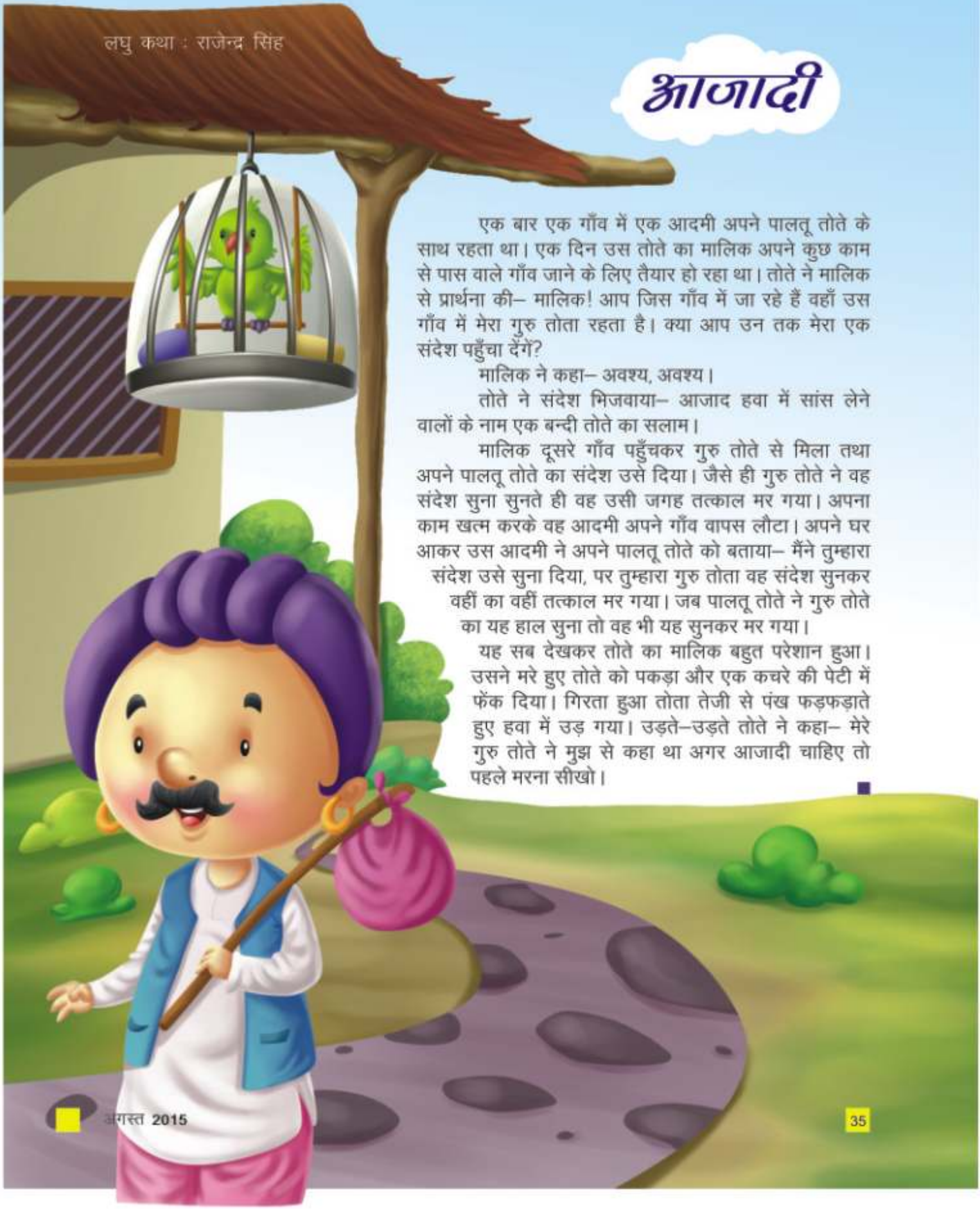

एक बार एक गाँव में एक आदमी अपने पालतू तोते के साथ रहता था। एक दिन उस तोते का मालिक अपने कुछ काम से पास वाले गाँव जाने के लिए तैयार हो रहा था। तोते ने मालिक से प्रार्थना की– मालिक! आप जिस गाँव में जा रहे हैं वहाँ उस गाँव में मेरा गुरु तोता रहता है। क्या आप उन तक मेरा एक संदेश पहुँचा देंगें?

मालिक ने कहा– अवश्य, अवश्य।

तोते ने संदेश भिजवाया– आजाद हवा में सांस लेने वालों के नाम एक बन्दी तोते का सलाम।

मालिक दूसरे गाँव पहुँचकर गुरु तोते से मिला तथा अपने पालतू तोते का संदेश उसे दिया। जैसे ही गुरु तोते ने वह संदेश सुना सुनते ही वह उसी जगह तत्काल मर गया। अपना काम खत्म करके वह आदमी अपने गाँव वापस लौटा। अपने घर आकर उस आदमी ने अपने पालतू तोते को बताया– मैंने तुम्हारा संदेश उसे सुना दिया, पर तुम्हारा गुरु तोता वह संदेश सुनकर वहीं का वहीं तत्काल मर गया। जब पालतू तोते ने गुरु तोते का यह हाल सुना तो वह भी यह सुनकर मर गया।

यह सब देखकर तोते का मालिक बहुत परेशान हुआ। उसने मरे हुए तोते को पकड़ा और एक कचरे की पेटी में फेंक दिया। गिरता हुआ तोता तेजी से पंख फड़फड़ाते हुए हवा में उड़ गया। उड़ते–उड़ते तोते ने कहा– मेरे गुरु तोते ने मुझ से कहा था अगर आजादी चाहिए तो पहले मरना सीखो।

राखी का संदेश

कविता : चन्द्रभान निरंकारी

हर सावन में आती राखी,
बहना से मिलवाती राखी,
चाँद सितारों की चमकीली,
कलाई को कर जाती राखी।
जो बिलकुल फूला न समाता,
मनभावन क्षण लाती राखी,
अटूट–प्रेम का भाव धागे से,
हर घर में बिखराती राखी।
सारे जग की मूल्यवान,
चीजों से बढ़कर भाती राखी,
सदा बहन की रक्षा करना,
भाई को बतलाती राखी।

सदियों की राखी

कविता : हरिप्रसाद धर्मक

सदियों से आती है राखी।
सब पर प्यार लुटाती राखी।।
भाई बहन के प्रेम का धागा।
है अटूट बंधन ये राखी।।
भिन्न–भिन्न रंगों की राखी।
मनमोहक रंगों की राखी।।
बच्चों युवकों सबको प्यारी।
भाई बहन की प्यारी राखी।।
बहनों की रक्षा ये करती।
भाइयों की रक्षा भी करती।।
भाई–बहन पर प्यार लुटाती।
जब भी आती है ये राखी।।
नहीं किसी से भेद कराती।
सबको एक कराती राखी।।

संकलनकर्ता : विद्या प्रकाश

हमारे राष्ट्रीय प्रतीक

राष्ट्रीय गान
जन गण मन

राष्ट्रीय गीत
वन्देमातरम्

राष्ट्रीय वाक्य
सत्यमेव जयते

राष्ट्रीय पर्व

26 जनवरी
गणतंत्र दिवस

15 अगस्त
स्वतंत्रता दिवस

2 अक्टूबर
गाँधी जयन्ती

पढ़ो और हँसो

एक उम्मीदवार ने वोटर के घर जाकर कहा– भैया जी, जरा ख्याल रखना मैं खड़ा हूँ।
कुर्सी की ओर इशारा करते हुए परिचित ने कहा– आप खड़े क्यों हैं? बैठिए न!

सुनीता : सोनिया तुम्हारे जाने के बाद मैं तुम्हें बहुत याद करूँगी।
सोनिया : क्या तू सच कह रही है?
सुनीता : बिल्कुल सच, लेकिन पहले तुम यहाँ से जाओ तो सही।

चूहा : (बिल्ली से) बिल्ली मौसी! आज तुम्हारी मेरे यहाँ दावत है।
बिल्ली मौसी : जरूर–जरूर आऊँगी, तुमने बुलाया जो है।

बिल्ली मौसी शाम को आई और चूहे से बोली –
म्याऊँ–म्याऊँ।
यह सुनकर चूहा बोला–
रूको–रूको जरा मैं छुप जाऊँ।

माँ : (सुशील से), आज तुम स्कूल से जल्दी कैसे आ गए?
सुशील : क्योंकि टीचर के सवाल का जवाब सिर्फ मैं ही दे पाया।
माँ : क्या सवाल था?
सुशील :कल स्कूल की घण्टी जल्दी किसने बजाई थी।

एक व्यक्ति अपने गधे का इलाज कराने जानवरों के अस्पताल ले गया। दवा खाते ही गधा भागने लगा।

व्यक्ति ने डॉक्टर से पूछा –
कितना पैसा हुआ?
डॉक्टर ने कहा – दस रुपया।
व्यक्ति ने बीस रुपये देते हुए कहा– मुझे भी एक खुराक दीजिए ताकि मैं गधे को पकड़ सकूँ।

एक मूर्ख बर्फ के टुकड़े को हाथ में लेकर उसे बड़े ध्यान से देख रहा था।
दूसरे मूर्ख ने पूछा – यह तुम बर्फ के टुकड़े को इतने ध्यान से क्यों देख रहो हो?
पहला – मैं यह जानने की कोशिश कर रहा हूँ कि यह 'लीक' कहाँ से हो रहा है।

एक पड़ौसी : (दूसरे पड़ौसी से) तीन बुलाओ और तेरह आ जाएं तो क्या किया जाए?
दूसरा पड़ौसी : फौरन 'नौ दो ग्यारह' हो जाने में ही भलाई है।

योगिता : क्या कल तुम्हारी पूरी क्लास पिकनिक पर जा रही है?
अर्पिता :हमारी क्लास तो नहीं पर हाँ बच्चे जरूर पिकनिक पर जा रहे हैं।

राजेश को साइकिल पर बैठा कर राजन पहाडी की चढ़ाई चढ़ रहा था कि ऊपर पहुँचते–पहुँचते वह थककर निढाल हो गया।
वह बोला – बहुत चढ़ाई थी। मेरे तो पसीने छूट गये।
राजेश बोला – हाँ यार! अगर मैं आगे बैठा साइकिल की ब्रेक दबाए न रखता तो साइकिल पीछे लुढ़क जाती।

भिखारी : भगवान के लिए अंधे भिखारी को कुछ दे दो बाबा।
राहगीर : भीख तो दे दूँ पर कैसे मानूं कि तुम अंधे हो?
भिखारी : साहब क्या सामने वाले लाल मकान की छत पर बैठा सफेद कबूतर आपको दिख रहा है?
राहगीर : हाँ, मुझे तो दिख रहा है।
भिखारी : लेकिन वह कबूतर मुझे दिखाई नहीं दे रहा है।

एक व्यक्ति : डॉक्टर साहब मेरी पत्नी को दांतों से नाखून चबाने की बुरी आदत है, क्या करूं?
डॉक्टर : इसमें चिन्ता की क्या बात है। अपनी पत्नी को दाँतों के डॉक्टर के पास ले जाइए और सारे दांत उखड़वा दीजिए।

मीना : (अर्चना से) तुम रात को दूध को खराब होने से बचाने के लिए क्या करती हो?
अर्चना : सारा दूध रात को ही पी लेती हूँ।

किरायेदार : क्या आपकी छत से हमेशा पानी टपकता है?
मकान मालिक : नहीं जनाब, सिर्फ वर्षा के दिनों में ही टपकता है।

महिला :डॉक्टर साहब! एक दाँत निकलवाना है। और हाँ सुन्न करने की जरूरत नहीं है क्योंकि हम बहुत जल्दी में हैं। अब आप फटाफट दाँत निकाल दीजिए।

उसके साहस पर डॉक्टर दंग रह गया और बोला– आप बहुत बहादुर हैं। बताइए कौन–सा दाँत निकालना है।

महिला ने पीछे खड़े अपने पति की तरफ इशारा करके बोली– वहाँ क्यों खड़े हों, अपना दाँत दिखाइए न।

एक बार एक बातूनी महिला को चैक करने के बाद डॉक्टर ने कहा– आपको कोई बीमारी नहीं है, केवल आपके शरीर को आराम की जरूरत है।
महिला बोली – लेकिन मेरी जबान तो देखिये।
डॉक्टर बोला – इसे आप से भी ज्यादा आराम की जरूरत है।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

प्रेरक–प्रसंग : किशोर डैनियल

परिश्रम

एक दार्शनिक ने कहा है– "यदि तुम तन्दुरूस्त और स्वस्थ हो तो तुम्हें आलसी बनकर जीने का अधिकार नहीं है।"

हमारे स्वास्थ्य के लिए भी मेहनत एवं श्रम करना अत्यन्त आवश्यक है। सुन्दर भविष्य भी उन्हीं का है जो श्रम करते हैं। कुछ आदमी भाग्य के भरोसे बैठे रहते हैं पर भाग्य भी उनका ही साथ देता है जो परिश्रम करते हैं। यदि तुम महान और बड़ा बनना चाहते हो तो निश्चय ही तुम्हें साधारण व्यक्तियों से अधिक श्रम करना पड़ेगा। संसार में जितने भी महान व्यक्ति हुए हैं, वे अपने परिश्रम से ही महान हुए हैं।

बच्चों! तुमने राइट बंधुओं का नाम तो सुना ही होगा? वे दो साधनहीन बालक थे। परन्तु उनके हृदय में ऊँचे उद्देश्य का सूर्य प्रकाशित हो रहा था। वे बहुत गरीब परिवार से थे। अपनी आजीविका के लिए एक भाई ने मृत पशुओं की हड्डियां चुन–चुन कर खाद के लिए कारखानों को बेची। उनके लए वह आवारा कुत्तों से भी झगड़ा। दूसरे ने पुराने टीन के डिब्बे और प्लास्टिक के टुकड़ों को बीना और कारखानों को बेचा। धीरे–धीरे साधन जुटाए और साइकिलों की दुकान खोली। तरह–तरह की साइकिले बनायीं और फिर उन्होने वायुयान की उड़ान सम्भव बना दी। घर, परिवार, नगर के लोगों ने उनकी हँसी उड़ाई, व्यंग्य किये, अनादर किया। पर वे अपनी धुन के पक्के थे। आखिरकार एक दिन उन्होंने अपना वायुयान उड़ा कर सफलता प्राप्त की। यह सब उनकी मेहनत, लगन और परिश्रम का ही परिणाम था।

सहर (सिरसा)

हनिका (दिल्ली)

ऋषिका जगवानी (ग्वालियर)

मुस्कान (अमरावती)

प्रतीक (सिकंदराबाद)

विशेष (शांति नगर)

एकता जोशी (पठानकोट)

पवित्र कपूर (सफीदों)

सान्वी (इलाहाबाद)

प्रतीक (खातीबनगर)

लक्ष्य पाहूजा (अम्बाला)

अनन्या वर्मा (दिल्ली)

अभिषेक राज (गांधीनगर)

गर्व सुखीजा (ग्वालियर)

सुदीक्षा शर्मा (आरीपुर)

सीजल (इलाहाबाद)

समर्थ चितोरिया (आगरा)

अनुराग सिंह (मोहाली)

अनुप्रीत कौर (बरनाला)

समर (श्रीगंगानगर)

नवनीत (समस्तीपुर)

योगेश कुमार (पटियाला)

अभीज्ञ (भटिंडा)

दक्ष झावर (होशियारपुर)

पलक गोयल (कानपुर)

समप्रीती शर्मा (जम्मू)

अश्विन (दिल्ली)

सानवी तायल (दिल्ली)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत 10 वर्ष तक की आयु के बच्चों के फोटो भेज सकते हैं। जिस माह में बच्चे का जन्म दिन हो, उससे दो माह पूर्व केवल पासपोर्ट साइज का फोटो इस पते पर भेजें।

सम्पादक, हँसती दुनिया,
पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9

फोटो के पीछे यह कूपनं चिपकाना अनिवार्य है।

नाम.....जन्म माह.....वर्ष.....

पता .....

.....

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

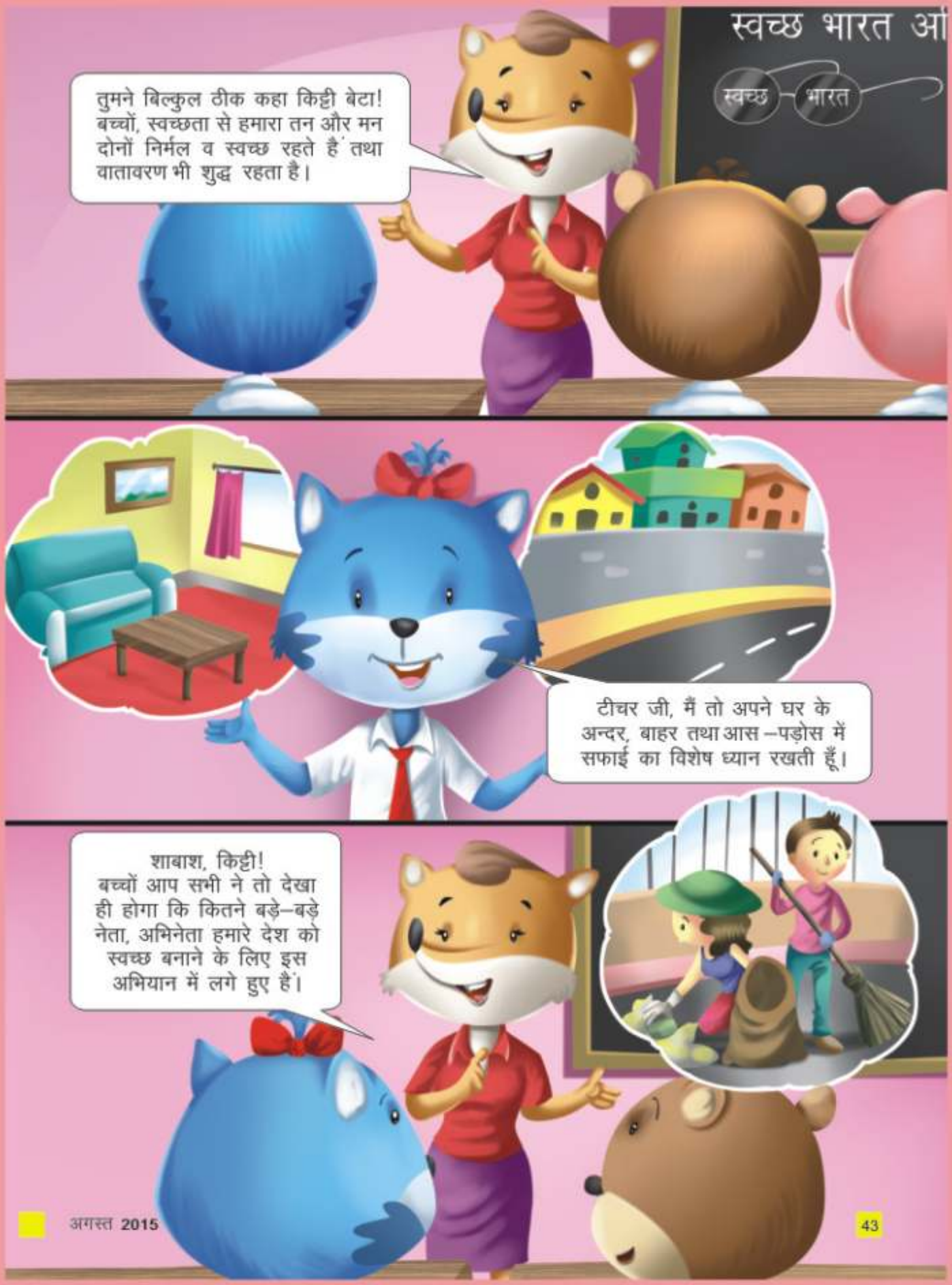
स्वच्छ भारत अ
स्वच्छ
भारत
तुमने बिल्कुल ठीक कहा किट्टी बेटा! बच्चों, स्वच्छता से हमारा तन और मन दोनों निर्मल व स्वच्छ रहते हैं तथा वातावरण भी शुद्ध रहता है।
टीचर जी, मैं तो अपने घर के अन्दर, बाहर तथा आस–पड़ोस में सफाई का विशेष ध्यान रखती हूँ।
शाबाश, किट्टी! बच्चों आप सभी ने तो देखा ही होगा कि कितने बड़े–बड़े नेता, अभिनेता हमारे देश को स्वच्छ बनाने के लिए इस अभियान में लगे हुए हैं।

हाँ! टीचर जी, मैंने टी. वी. पर प्रचार भी देखा था जिसमें लोग सड़क पर झाड़ू लगाकर स्वच्छता अभियान का प्रचार कर रहे थे।
ठीक कहा किट्टी तुमने! बच्चों उनकी इस पहल को हम सभी को अपनाना होगा। क्योंकि भारत हमारा देश है, और हम इसमें रहते हैं। इसकी हर सड़क–गली को साफ रखना हमारा कर्तव्य है।
आप बिल्कुल सही कह रही हो टीचर जी
जी टीचर जी, हम भी इस अभियान में शामिल हो गए हैं और स्वच्छता को अपनाएंगे।
बहुत अच्छा बच्चों! अब से आपका भी कर्तव्य है कि अपने आस–पास कूड़ा इकट्ठा न होने दे, कूड़ेदान का हमेशा प्रयोग करना चाहिए। और सुनो अगर कोई इधर–उधर कूड़ा या गंदगी फैलाता हुआ नजर आए तो उसे मना करो।

टीचर जी! इसके साथ ही हम रविवार को अपने मुहल्ले का भी दौरा करेंगे, और लोगों को स्वच्छता के फायदों के बारे में भी बताएंगे।
बहुत खूब बच्चों। और वैसे भी बच्चों साफ–सफाई के काम में हमें शर्म नहीं करनी चाहिए, शर्म तो गदंगी से करनी चाहिए।
ठीक कहा आपने टीचर जी! स्वच्छता तो हमारी शान होनी चाहिए।

आज तिरंगे को फहरायें

कविता : शिवनारायण सिंह

कुटिया से महलों तक आओ
आज तिरंगे को फहरायें,
आज तिरंगे के नीचे हम
राष्ट्रगीत मिल-जुल कर गायें।

बापू-नेहरु के सपनों को
आओ हम पूरा करवायें,
आँच न आये आजादी पर
आज तिरंगे को फहरायें।

तोड़ फोड़ है बात बुरी
चलकर सबको हम समझायें,
निर्माणों की बात करें हम
आज तिरंगे को फहरायें।

मानवता हो धर्म हमारा
मजहब कभी न आड़े आये,
रोशन नाम करें भारत का
आज तिरंगे को फहरायें।

मैं 60 वर्षीय पेशे से आर्किटेक्ट हूँ। मैं इस पत्रिका को बहुत सालों से निरंतर पढ़ता आ रहा हूँ। इसकी प्रत्येक कहानी, लेख एवं चित्रकथा बहुत ही शिक्षाप्रद होती है। मुझे अभी हँसती दुनिया हिन्दी की नई प्रति प्राप्त हुई है। वह देखने में बहुत ही रोचक, आकर्षक एवं लुभावनी लगी। हँसती दुनिया के इस अंक लुभावने अंक के लिए सम्पादक मण्डल बधाई का पात्र है।

अशोक गोयल (शक्ति नगर, दिल्ली)

मुझे हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है तथा मुझे इस पत्रिका का बेसब्री से इन्तजार रहता है। जब यह पत्रिका आती है तो सबसे पहले मैं ही इसे पढ़ती हूँ। मेरे मम्मी, पापा तथा रिश्तेदार आसपास के लोग भी इसे बड़े ही चाव से पढ़ते हैं। क्योंकि जहाँ इसमें बच्चों के लिए अच्छी बातें एवं षिक्षाप्रद कहानियां होती हैं वहाँ ये बड़ों को भी अच्छी लगती हैं।

मैं तो यह कहूँगी कि इस पत्रिका को सभी लोग पढ़ें और पढ़ाएं और इस पत्रिका को सभी लोग मंगवाएं और पढ़ें।

जीवन के हर पल को खुशियों से भर देने वाली यह पत्रिका ऐसे ही हम बच्चों का मार्गदर्षन करती रहे इसके लिए हम सब की तरफ से हँसती दुनिया परिवार को धन्यवाद!

प्रतीक्षा कुशवाहा (इटावा)

हँसती दुनिया का अप्रैल अंक पढ़ा। 'सबसे पहले' ने इस बार हर कार्य में अपनी खुशी की महिमा को जानने का सरल मार्ग बताया।

कहानियों में 'गबलू का गला', 'अक्ल आ गई', 'मेरा कौन?' और 'बेईमानी का फल' अच्छी लगी तथा 'तूम्बडी का स्वाद', 'सच्चा सुख' आदि प्रेरक–प्रसंग भी षिक्षाप्रद व लाजवाब थे।

कविताओं में 'मिलकर रहना', 'नन्हें–मुन्ने', 'पेड़ लगाएंगें' आदि कविताओं ने मन मोह लिया।

विज्ञान कथा में 'स्टेथेस्कोप का जन्म', 'ऐसे भी है हेलिकॉप्टर' तथा विशेष लेख में 'बुलबुल का रंगीन संसार' जानदार लगा। इसके अलावा 'दयालु ममतामयी 'फ्लोरेंस नाइटिंगेल' लेख बहुत–बहुत षानदार लगा व मन को छू गया।' इस अंक में सभी सामग्री पठनीय के साथ–साथ लुभावनी व सुंदर लगी।

श्याम बिल्दानी 'सादगी' (बडनेरा)

मैं हँसती दुनिया (मासिक) का पाठक हूँ। यह पत्रिका बालकों के मानसिक तथा बौद्धिक विकास की मनोरंजक पत्रिका है। अपनी संस्कृति से रूबरू कराने के अलावा बच्चों को यह संस्कारवान बनने की भी पूरी शिक्षा देती है।

जून अंक में 'मैं खीर नहीं खाऊँगा', 'टिंकू की धैर्य परीक्षा' एवं 'समझौता' आदि कहानियां पसन्द आई। इसके अतिरिक्त 'सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी' और 'भैया से पूछो' भी ज्ञानवर्द्धक लगे। हँसती दुनिया बच्चों की एक बुद्धिमान और सर्वश्रेष्ठ मित्र के समान है।

मोहम्मद मुमताज़ हसन (रिकाबगंज)

जून अंक रंग भरो परिणाम

प्रथम :

निष्ठा छाबड़ा
आयु 11 वर्ष
सी–8, सिन्धी कालोनी,
राजा पार्क, जयपुर

द्वितीय :

पुष्पांजलि विश्वकर्मा
आयु 14 वर्ष
ग्राम व पोस्ट : नटवां जंगल
टोला– सहगडवा, महाराजगंज

तृतीय :

पृथ्वीराज भिरानी
आयु 9 वर्ष
निरंकारी भवन के सामने
मूर्तिजापुर, जिला : अकोला

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

सान्ध्या सिंघल (मॉडल टाऊन, दिल्ली), विवेक नागरवाल (प्रताप नगर, जयपुर), हरीश कुमार (गडोला), परिक्षित चौहान (मोढी), अक्षय कुमार (चम्बोह), आकाश गुलेरिया (छत्री), आकांक्षा निगम (जिगना), नितिन कुमार (कोटला), गौरव कुमार गौतम (पांचूपुर), नेहा बिन्दू (नहवानीपुर), धारणा मृदुल (गोहाना), स्वाति गुप्ता (ठियोग), करुणा चुटानी (ज्योति पार्क, गुड़गांव), निर्मित कुमार (प्रेम नगर, भटिण्डा), आरती कश्यप (धारीघाट), आरती शर्मा (सेर), खुशी (अमरपुरी), ऋद्धिमा (रामपुराफूल)।

अगस्त अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भर कर 15 अगस्त तक सम्पादक 'हँसती दुनिया', सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 को भेज दें।

परिणामों की घोषणा हँसती दुनिया के अक्टूबर अंक में की जायेगी। चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पूरा पता साफ–साफ भरें। इसमें 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भर कर भेंजे।

रंग भरो

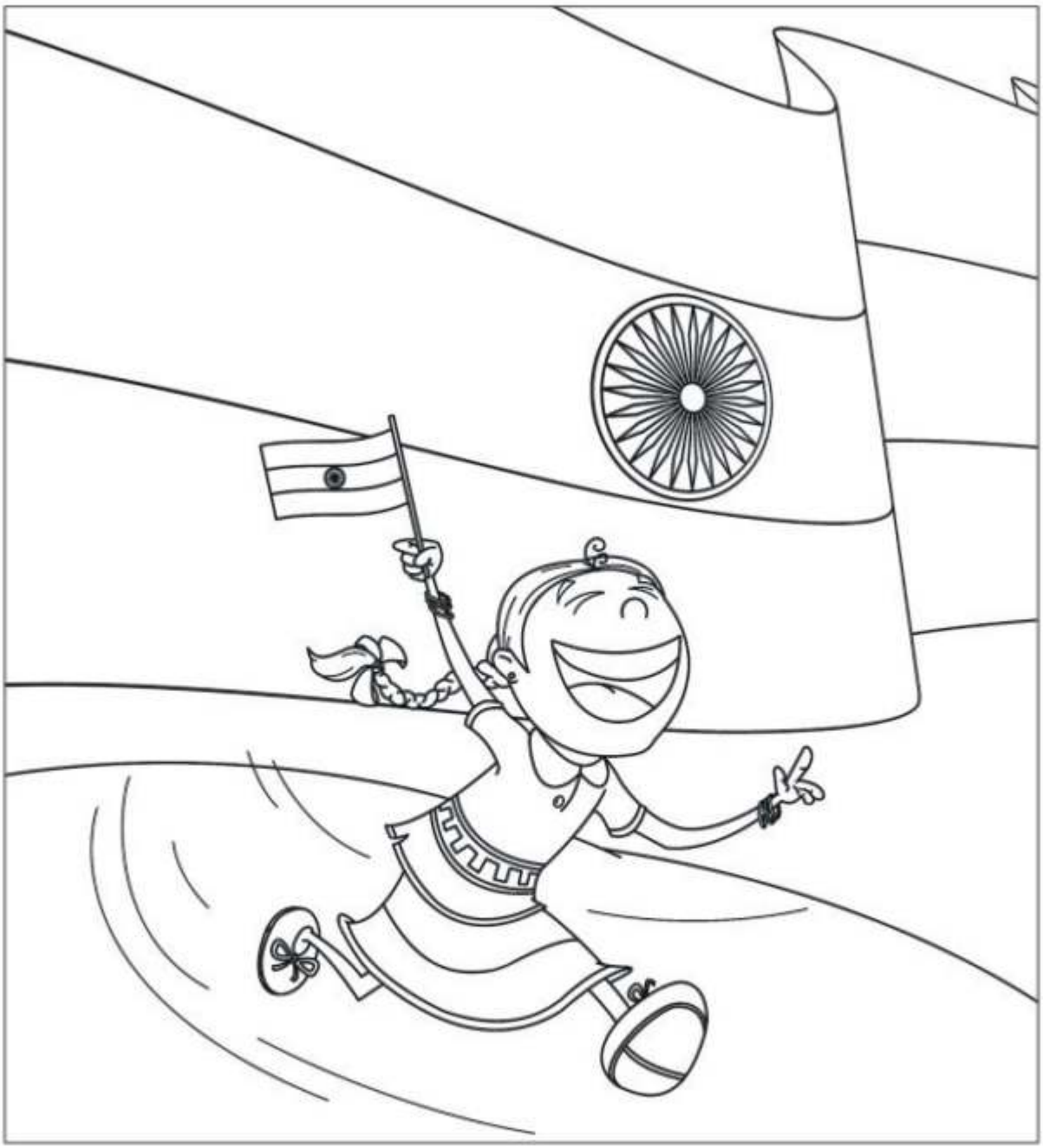

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

TU HI NIRANKAR

AN ISO 9001:2000 Certified Company.

SUPER AQUA®

R.O. System

WHITE GOLD®

AQUA FRESH

Reverse Osmosis

AN ISO 9001:2000 Certified Company.

Wholesale & Retailer of all type of **Water Purifier, Water Dispenser, R.O. System & Commercial R.O System 100 to 500 Ltr.**

Free Gift
(5Ltr. Cooker)

Free Gift
(Juicer Mixer)

Free Gift
(Toaster)

SALE-SERVICE & AMC WATER PURIFIER SYSTEM

FREE DEMO
WATER TESTING

आसान किस्तों पर उपलब्ध
0% FINANCE

for enquiry call Customer Care

09650573131

(Arvind Shukla)

स्वच्छ पानी, स्वच्छ जीवन

SATGURU HOME APPLIANCES
(Call. 09910103767)

Head office. E-1/23, Ground Floor Sec-16, Rohini Nr. Jain Bharti Public School, Delhi-110085

Mumbai office. Flat No. 302, C-Wing, Parth Complex Nr. T.V Tower, Badlapur (East) Thane, Maharashtra,

पानी की शुद्धता सेहत की सुरक्षा, दूषित एंव खारे पानी को मिनरल बनायें

पेश है, **Super Aqua** एक ऐसा प्यूरिफायर जो न केवल आधुनिक तकनीक से पानी को स्वच्छ करता है, बल्कि उसे फिल्टर होने के बाद लम्बे समय तक रखने के लिए सक्षम बनाता है। यह सम्भव होता है एक खास किस्म के **U.V.** चैम्बर से। जब पानी इस काटरेज से गुजरता है तो उसमें एक विशेष किस्म का बैक्टीरिया विरोधक तत्व मिल जाता है जो पानी को लम्बे समय तक रखने और पीने योग्य बनाता है।

तो ध्यान रहे पीने के पानी में कोई लापरवाही न बरते, सिर्फ **SUPER AQUA** ही अपनाएं।

MUBAI : Vorivali, Kurla, Dadar, Thane, Ulhas Nagar, Kalyan, Badlapur **MAHARASHTRA** : Pune, Aurangabad, Varsa, Nagpur, Buland, Kohlapur
SOUTH INDIA : Hyderabad, Belgaum **UTTAR PRADESH** : Allahabad, Gorakhpur, Mathura, Agra, Kanpur, Jonpur, Lucknow, Azamgarh
UTTRAKHAND : Dheradun, Haldwani, Rishikesh, Haridwar **PUNJAB** : Chandigarh, Hoshiarpur, Bhatinda, Patiala, Jalandhar, Ludhiana
BIHAR : Patna, Samastipur, Darbhanga, Gaya, Bhagalpur **WEST BENGAL** : Kolkata, Sealldah **RAJASTHAN** : Jaipur, Jodhpur

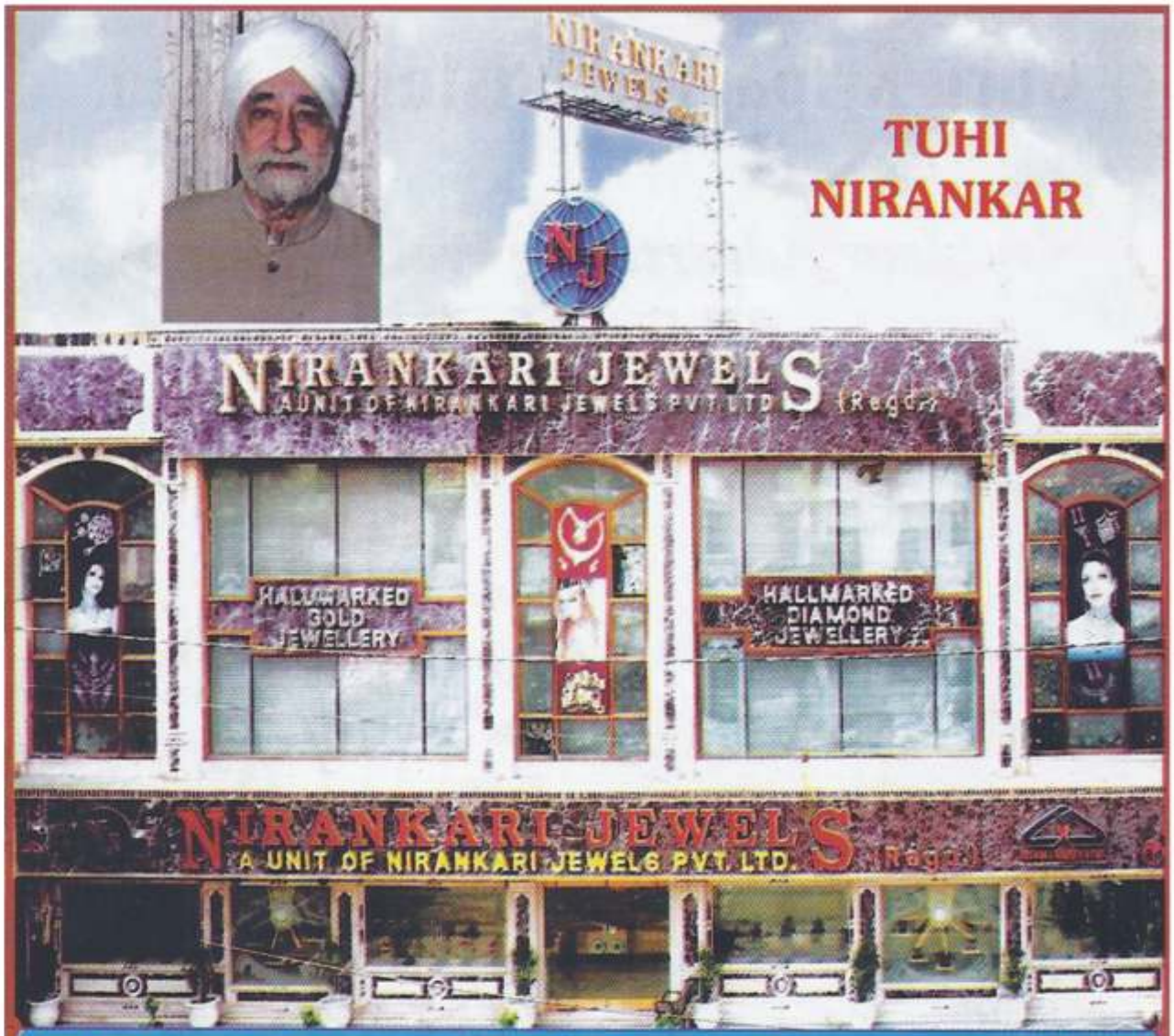

NIRANKARI JEWELS REGD.

A UNIT OF NIRANKARI JEWELS PVT. LTD.

GOVT. APPROVED VALUERS

78-84, Edward Line, Kingsway, Delhi-110009

TELE : (Showroom)

27227172, 27138079, 27244267, 42870440, 42870441, 47058133

E-mail : nirankari_jewels@hotmail.com

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2015-17
Licence No. U (DN)-23/2015-17
Licenced to post without Pre-payment

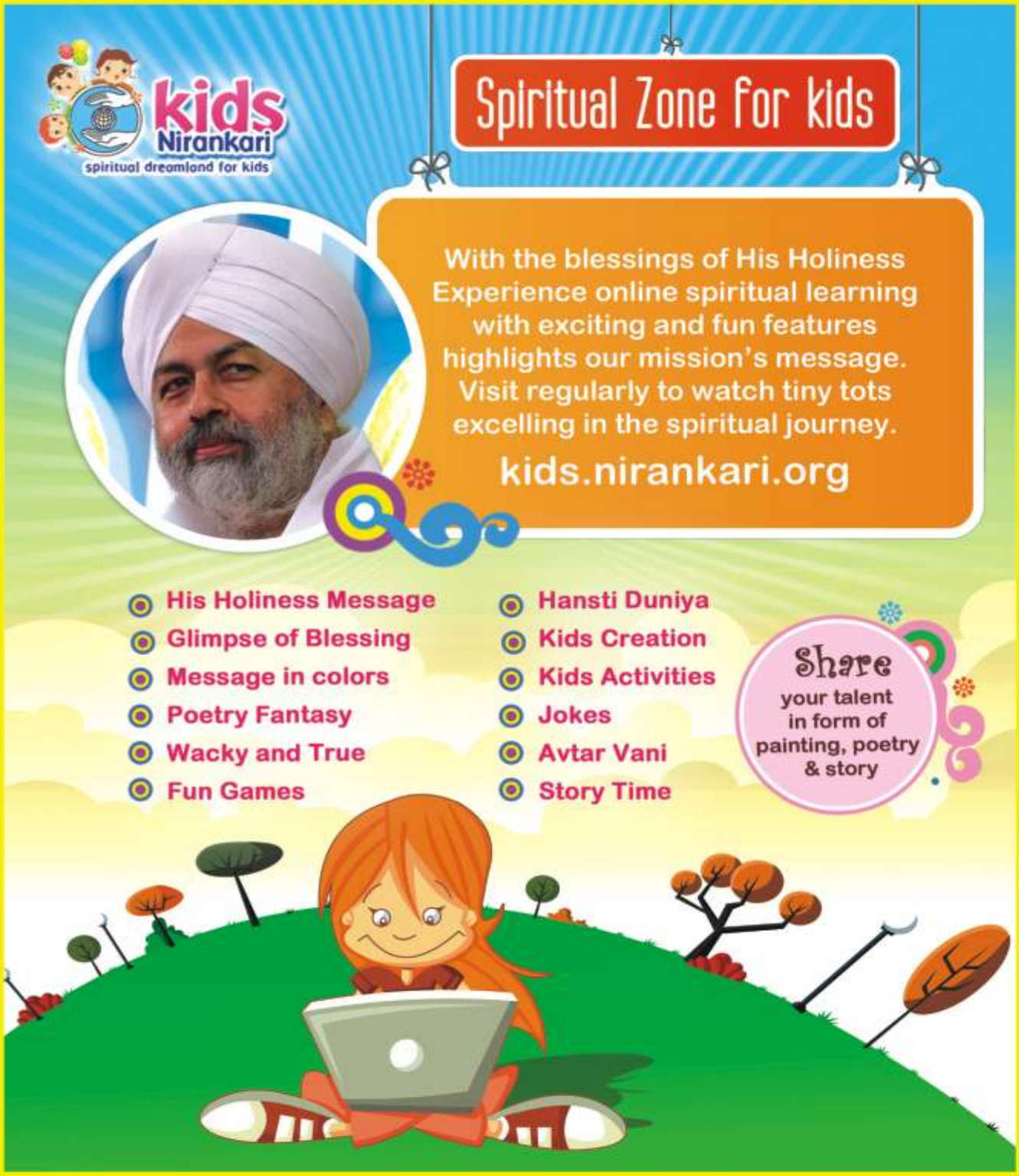

Posted at IMBC/1 Prescribed dates 21th & 22nd. Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)